UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 अंक - 10 युगाब्द - 5125 विक्रम संवत् - 2080 जुलाई - 2023

मूल्यः 12

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काको लागूं पाएं।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

स्वावलम्बन

महान समाज सेवक और प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से भला कौन परिचित नहीं है! उनके जीवन की यह एक घटना स्वावलम्बन से संबंध रखती है।

बंगाल के एक छोटे से स्टेशन पर एक रेलगाड़ी आकर रुकी। गाड़ी में से एक आधुनिक नौजवान लड़का उतरा। लड़के के पास एक छोटा–सा संदूक था। स्टेशन पर उतरते ही लड़के ने कुली को आवाज लगानी शुरू कर दी।

वह एक छोटा स्टेशन था, जहाँ पर ज्यादा लोग नहीं उतरते थे, इसलिए वहाँ उस स्टेशन पर कुली नहीं थे। स्टेशन पर कुली न देखकर लड़का परेशान हो गया। इतने में एक अधेड़ उम्र का आदमी धोती–कुर्ता पहने हुए लड़के के पास से गुजरा। लड़के ने उसे ही कुली समझा और उसे सामान उठाने के लिए कहा। धोती–कुर्ता पहने हुए आदमी ने भी चुपचाप सन्दूक उठाया और आधुनिक नौजवान के पीछे चल पड़ा।

घर पहुँचकर नौजवान ने कुली को पैसे देने चाहे, पर कुली ने पैसे लेने से साफ इन्कार कर दिया और नौजवान से कहा–"धन्यवाद! पैसों की मुझे जरूरत नहीं है, फिर भी अगर तुम देना चाहते हो, तो एक वचन दो कि आगे से तुम अपना सारा काम अपने हाथों ही करोगे। अपना काम अपने आप करने पर ही हम स्वावलम्बी बनेंगे और जिस देश का नौजवान स्वावलम्बी नहीं हो, वह देश कभी सुखी और समृद्धिशाली नहीं हो सकता।'

धोती–कुर्ता पहने यह व्यक्ति स्वयं उस समय के महान समाज–सेवक और प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ही थे।

अपनी बात

हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, अथवा राष्ट्रीय जीवन का कोई भी क्षेत्र हो त्याग एवं संन्यास की भावना की अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि यदि मानवता की सर्वोच्च आकांक्षाओं का पोषण किया जाना है, यदि मनुष्य को परम सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है, सत्य सनातन शाश्वत सत्य को जीवित रखने है तथा इस ज्ञानालोक का प्रसार करना है; यदि मनुष्य को भगवद्–अनुभव प्राप्त करना है, इसकी महत्ता को अपने व्यक्तिगत उदाहरण से प्रकट करना है तथा मानवता की निःस्वार्थ सेवा करनी है, तो संन्यास आश्रम की व्यवस्था को बनाये रखना ही होगा क्योंकि संभवतः इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रख कर प्राचीन काल में हमारे ऋषि–मुनियों द्वारा नर को नारायण बनाने, मोक्ष प्रदान करने की दिशा में, व्यक्ति के जीवन को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास इन चार आश्रमों में विभक्त कर आश्रम व्यवस्था की स्थापना की गई थी।

ब्रह्मचर्य आश्रम (जन्म से 25 वर्ष) में व्यक्ति को मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य के विषय में ज्ञान प्रदान कर जीवन की एक आधारशिला निर्मित कर, उसे सिखाया जाता है कि धर्म एवं अधर्म क्या हैं, सत्य क्या है तथा आत्मसंयमपूर्ण जीवन किस प्रकार व्यतीत किया जाये जिससे कि वह जीवन के अगली सीढ़ी पर उत्तरोत्तर अग्रसर हो सके।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ग्रहण किये गये समस्त महान् आदर्शों एवं शिक्षाओं के अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक जीवन गृहस्थाश्रम (26 से 50 वर्ष) में समुचित अभ्यास किया जाता है। एक गृहस्थ विविध आसक्तियों के मध्य अनासक्त भाव से संसार में रहते हुए संसार से नहीं बँधने हेतु स्वयं को प्रशिक्षित करने का प्रयास करता है, स्वार्थ रहित होकर धनार्जन के लिए अथक प्रयत्नशील रहने का भी प्रयास करता है।

जब मनुष्य विकास की सीढ़ी पर एक और कदम आगे बढ़ाता है, तो वह तीसरे 'वानप्रस्थ (51 से 75 वर्ष) आश्रम में आत्मसंयम एवं वैराग्य से पूर्ण एक आदर्श जीवन व्यतीत करते हुए, अहंकार, स्वार्थरहित, नैतिक पूर्णता के उच्च स्तर को बनाए रखने का प्रयास करता है। उसके बाद जीवन का चतुर्थ चरण संन्यास आश्रम (76 से 100 वर्ष) आता है, जहाँ लोग सन्यास की दीक्षा ग्रहण कर सन्यासी बन जाते हैं।

प्रत्येक धर्म में संन्यासी होते हैं जो एकान्तवास एवं ध्यान का जीवन व्यतीत करते हैं। ये संन्यासी ही हैं जो विश्व के धर्मों को सुरक्षित बनाये रखते हैं। संन्यासी ही दुःख, कष्ट से पीड़ित गृहस्थजनों को शान्ति एवं सान्त्वना प्रदान करते हैं। ये जन–जन को जीवन का वास्तविक अभिप्राय समझाते हैं। तथा उनके जीवन को दिव्य आनन्द से भर देते हैं। संन्यासीजन मानव की आध्यात्मिक आकांक्षा, परम सत्य के साक्षात्कार एवं उसके अद्भुत परिणामों के महान् उदाहरण स्वरूप होते हैं। वे औपनिषदिक ज्ञान, अध्यात्म विद्या, आत्म–ज्ञान एवं शान्ति के सन्देशवाहक होते हैं।

एक संन्यासी के लिए आत्मा का सम्बन्ध ही सच्चा सम्बन्ध होता है। वह सर्वत्र एकमेव अद्वितीय आत्मा का अनुभव करता हुआ स्वयं को सम्पूर्ण विश्व से सम्बन्धित मानता है तथा मानवता की सेवा करता है। उसका त्याग नकारात्मक नहीं है, अपितु यह संसार की वस्तुओं एवं जीवन के उचित बोध पर आधारित है। उसका संसार के प्रति व्यवहार अनासक्त सेवा के भाव से प्रेरित होता है।

एक वास्तविक संन्यासी ही इस धरा का सर्वाधिक शक्तिशाली सम्राट् है; वह किसी से कुछ नहीं लेता है, सदैव दूसरों को देता ही रहता है। संन्यासियों ने ही भूतकाल में महान् एवं भव्य कार्य किये; वे ही वर्तमान काल एवं भविष्य में चमत्कारिक कार्य कर सकते हैं। जब तक संसार का अस्तित्व है, आदि शंकराचार्य का नाम विस्मृत नहीं किया जा सकता है। ये रामकृष्ण परमहंस देव, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द एवं स्वामी विवेकानन्द ही थे जिन्होंने शास्त्रों के दिव्य सदुपदेशों का व्यापक प्रचार–प्रसार किया तथा हिन्दू धर्म का संरक्षण किया। केवल एक संन्यासी ही वास्तविक लोककल्याण कर सकता है क्योंकि वह दिव्य ज्ञान से सम्पन्न है तथा उसके पास पर्याप्त समय है। एक सच्चा संन्यासी सम्पूर्ण विश्व की नियति को बदल सकता है। दिव्य ज्ञान के भण्डार, परम सत्य के पथप्रदर्शक, विश्व के प्रकाशस्तम्भ, आध्यात्मिक भवन की आधारशिला तथा शाश्वत धर्म के आधारस्तम्भ संन्यासी जन विश्व के विभिन्न राष्ट्रों का मार्गदर्शन करें जिससे सम्पूर्ण मानवता की रक्षा और जन कल्याण हो सके इसी आशा आकांक्षा के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

!! ईमानदारी सबसे महत्वपूर्ण जीवन मूल्य है !!

(The most important value is honesty)

कमल कुमार
पूर्व प्रदेश निरीक्षक जन शिक्षा समिति उ०प्र०

एक बालक ने अपनी माँ से कहा– मम्मा आपको शायद ध्यान न हो, मैं आपका कितना काम करता हूँ ? बताओ बेटा! क्या–क्या काम करते हो ? परन्तु काम करना तो बहुत अच्छी बात है। पर मम्मा फ्री में कौन काम करेगा ?

एक माह का हिसाब सम्भालो–मम्मा मैं आपको अपने एक माह का ही हिसाब समझाता हूँ। कृपया समझने का प्रयास करें।

- तीन बार आपने मुझे सुखराम की दुकान से सामान लेने के लिए भेजा एक बार के यदि तीन रुपये भी माना जाये तो 3 × 3 = 9 रुपये होते हैं।
- छोटी बहिन को सम्भालने के लिए आपने मुझसे कम से कम दस बार कहा होगा जो बड़ा ही मुश्किल काम है। इस काम के भी यदि एक बार के 3 रूपये ही माना जाये तो 10 × 3 = 30 रूपये होते हैं।
- पानी की बाल्टी सरकारी नल से भरकर लाने के लिए आपने कम से कम छः बार तो कहा ही होगा जो मुझ जैसे होनहार बालक के लिए बहुत ही कठिन काम है यदि इस काम के लिए प्रति बाल्टी 5 रूपये माना जाये तो 6 × 5 = 30 रूपये होते हैं इस माह का कुल हिसाब हुआ 9 + 30 + 30 = 69 रूपये चलो 9 रूपये का मैं आपको Discount देता हूँ। 60 रूपये तो दीजिए।

माँ ने पेपर के दूसरी तरफ लिखा–माँ ने गहरी सांस ली और पेपर को पलट कर दूसरी तरफ कुछ इस प्रकार लिखना प्रारम्भ किया –

9 महीने मैंने तुम्हें अपनी कोख में रखा तथा अपने खून से तुम्हारी परवरिश की इस काम के लिए No Charge.

जब–जब तुम बीमार पड़ते तो रात–रात भर तुम्हारे कारण जागी समय से दवाई दी, गुस्से में दवाई खिलाते समय जब जबरदस्ती करती तो आपकी लात भी खाई इसके लिए भी–No Charge.

पाँच वर्ष की आयु तक तुम्हारे मलमूत्र के कपड़े बदले और धोये रात भर आपको सूखे में सुलाने की चिन्ता करती रही इसका भी–No Charge

बोलना–चलना, लिखना पढ़ना सिखाया, चाचा–चाची, ताउ ताई, मामा–मामी, बुआ–फूफा, नाना–नानी, दादा–दादी से परिचय कराया। इस कार्य में मुझे बार–बार समय लगाना पड़ा। इस काम का भी– No Charge

No Charge + No Charge + No Charge + No Charge = Zero Rupees Bill

और गंगा यमुना बहने लगी–बालक ने जब यह पढ़ा तो उसकी आँखों से अविरल आँसू बहने लगे, रोते–रोते उसकी सुबकियां रुकने का नाम नहीं ले रही थीं। बाले की यह स्थिति देख माँ की आँखों से भी रह–रहकर अश्रु धार बहने लगी। बेटे को माँ ने गले से लगाया माँ की छाती से चिपका बालक पश्चाताप की अग्नि में जल रहा था। ऐसा लगा जैसे ज्वर से पीड़ित हो माँ–बेटे की आँखों से गंगा–यमुना झरने लगीं। बेटे ने माँ से क्षमा माँगी और कहा मम्मा मैं कभी भी इस प्रकार की हरकत की पुनर्रावृत्ति नहीं करूँगा। मम्मा में तुम्हें कभी दुःखी नहीं करूँगा और अपने से दूर नहीं करूँगा। Sorry मम्मा So much sorry-

अच्छे गुणों की आवश्यकता क्यों–सफल होने के लिए पैसा नहीं Values चाहिए। जीवन में Values का होना बहुत आवश्यक है। Values जीवन में

बहुत Importance रखते हैं। Values को लेकर अधिकांश बन्धु भगिनी Confuse हैं। इस प्रकार से समझने का प्रयास करें– बच्चों को टी०वी० बहुत पसन्द है। बच्चे कौन–सा टी०वी० ज्यादा पसन्द करते हैं ? Black & white or coloured ? आप कहेंगे कि ये तो सामान्य सी बात है Coloured Exectly जीवन को Colourful बनाने के लिए दिव्य गुणों का होना आवश्यक है। ये गुण ही Values हैं। ये दादा–दादी, नाना–नानी, जब कहानी सुनाया करती थीं तब उन कहानियों से प्रेरक प्रसंगों से हमें Values प्राप्त होते थे। यदि Teachers भी कहानी के माध्यम से Values पैदा करेंगे तो एक बहुत महत्वपूर्ण कार्य को पूर्ण करने में सफल व सक्षम होंगे।

मुझे कक्षा का नायक चयनित करना है–माध्वी नाम की एक आचार्या–दीदी कक्षा–कक्ष में गयीं और बच्चों से Intract होकर बोलीं–Good Morning students. I wants select the monitor of this class. सभी छात्र दीदी के इस वाक्य से खुश थे, उत्सुक थे तथा प्रफुल्लित थे। माध्वी दीदी ने कहा कि उसकी एक Condition है। मैं आप सबको एक Activity करने के लिए दूँगी। जो उस Activity को सफलतापूर्वक सजगता के साथ पूर्ण करेगा वही Class monitor होगा। बच्चे खुश थे। एक–एक कर जिज्ञासा के साथ पूछने लगे दीदी Activity तो बताइये करना क्या है ? बताती हूँ, बताती हूँ Activity पूर्ण करने के लिए एक माह का समय मिलेगा।

कक्षा के प्रत्येक छात्र को एक–एक बीज मिला, आचार्या दीदी ने सभी छात्रों को एक–एक बीज देते हुए कहा प्रिय भैया/बहनों आप अपने–अपने घर से एक–एक गमला लेकर, अपने माता–पिता, बड़ी दीदी की सहायता से गमले में मिट्टी तैयार कर इस बीज को सावधानीपूर्वक बोना है। गर्मी, धूप, पानी, छाया व प्रकाश की समुचित व्यवस्था करते हुए अगले माह 7 जुलाई को गमला विद्यालय लेकर आना है। जिसका गमला रंग–बिरंगे फूलों से युक्त पौध होगा, वही इस कक्षा का मानीटर होगा। सभी बच्चे बहुत खुश थे। देव नाम का एक बालक था उस कक्षा में उसने घर आकर अपनी मम्मी/दीदी की सहायता से गमले में बीज बो दिया। बाकी छात्रों ने भी ऐसा ही किया होगा। एक सप्ताह बाद देखने के उपरान्त जब बीज नहीं उगा तो चिन्ता होने लगी। देव ने अपनी बुआ से पूछा बुआ! एक बात बताओ। मैंने सावधानी से बीज बोया, गमले को रोज धूप बचाया, पानी देता, हवा में रखता किन्तु बीज से पौधा क्यों नहीं निकल रहा। यदि ऐसी ही स्थिति रही तो मैं मानीटर नहीं बन पाऊँगा। बुआ ने अश्वासन दिया। तुम निरन्तर यही काम करते रहो सफलता अवश्य मिलेगी। चिन्ता मत करो?

छः जुला को दीदी ने आदेश दिया–प्रतिदिन की भाँति आचार्या दीदी कक्षा में गयी और स्वभाव के अनुसार छात्रों से Intrect होते हुए बोली Good morning all of you- कल आप सबको अपना–अपना गमला लेकर आना है। Your time is up- अगले दिन सभी बच्चों ने अपने माता–पिता के साथ नर्सरी से रंग–बिरंगे फूलों से युक्त एक–एक गमला खरीदा और स्कूल के लिए चल दिये। अब देव को बड़ी चिन्ता हुई, उसने अपनी माँ से कहा कि मम्मा मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा। मम्मा बोली क्यों ? क्या बात है ? मैंने सावधानी से बीज बोया, पानी दिया, हवा व धूप की चिन्ता की, किन्तु बीज अंकुरित ही नहीं हुआ। माँ ने कहा बेटा ! चिन्ता मत करो। तुम अपने गमले को लेकर स्कूल जरूर जाओ और सारी बातें अपनी Teacher को बताना। हिम्मत से काम लो ! जाओ बेटा जाओ। भगवान तुम्हारे साथ है। फूलों की सुगन्ध से कक्षा–कक्ष सुगन्धित हो उठा देव उदास मन से गमला लेकर विद्यालय को चल दिया। रास्ते भर तरह–तरह के विचार मन में आते रहे। जैसे ही कक्षा–कक्ष में पहुँचा सभी बच्चे उसके खाली गमले को देखकर हँसने लगे। देव चुपके से सबसे अन्त में खाली पड़ी सीट पर जाकर बैठ गया। सबके गमलों से आ रही सुगन्ध ने कक्षा–कक्ष को महका दिया था। तभी टीचर ने कक्षा–कक्ष में प्रवेश किया Good morning all of you. Wah, Gazab क्या खुशबू आ रही है ? मुझे लगता है कि Every student should be monitor.

Now is breaking news-प्रत्येक छात्र के गगले को देखते हुए आचार्या दीदी देव के पास तक पहुँच गयी। उससे पूछा बेटा। आपका गमला–SSS । इतना ही कहा कि देव सुबक सुबक कर रो पड़ा और आचार्या दीदी को बताने लगा कि मैम ! मैंने सावधानी से बीज

बोया रोज पानी दिया, धूप में रखा किन्तु बीज अंकुरित ही नहीं हुआ। दीदी ! मैं झूट नहीं बोल रहा हूँ। Please believe me Mam- मैडम ने उसे ढाढस बंधाया–कोई बात नहीं, चिन्ता मत करो। I think about this. आचार्या दीदी वापस कक्षा के सम्मुख आयी और बोली– Now is breaking news. I declared the class monitor. Now is breadking news. Dev kumar is the monitor of this class. Every student start the cleping- ताली ! क्यों बजायें ताली ? प्रतिज्ञा चिल्लाई–वह मॉनीटर कैसे हो सकता है ? उसका गमला तो खाली है। तब टीचर ने कहा–जो बीज मैंने आप सबको दिये थे वे सब बीज नकली थे अर्थात खराब थे। यह देव नाम का बालक "एक ऐसा बालक है जिसने पूरी निष्ठा, लगन व ईमानदारी से अपना कार्य पूर्ण किया है।" ईमानदारी सबसे अच्छी नीति है (Honesty is the best policy) Most important value is Honesty.

बालक के व्यवहार से किसके चेहरे पर खुशी आयी–एक बालक का परीक्षा परिणाम आया माता–पिता ने पूछा कक्षा में कौन–सा स्थान आया है ? बालक ने कहा चौथा। बालक को बहुत डांट पड़ती है। बालक को एहसास होता है कि कक्षा में प्रथम स्थान आना कितना जरूरी है ? बालक को अंक कितने मिले और स्थान कौन–सा आया यह महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि यह महत्वपूर्ण है कि आज बालक ने किसकी मदद की? बालक के व्यवहार से किसके चेहरे पर प्रसन्नता आयी ? प्रसन्नता, मदद, परोपकार, सहयोग व संवेदना, न्याय, सत्यता आदि जीवन जीने के Values हैं। बालक के अन्दर इसका होना बहुत जरूरी है। जीना पडोसी के साथ है, जीना परिवार के साथ है तो पड़ोसी के साथ व परिवार में अपना सकारात्मक, मददपूर्ण व संवेदनायुक्त व्यवहार रहना चाहिए। आज बन्दूकें भारत–पाकिस्तान के बार्डर पर ही नहीं हमारे परिवारों में भी तनी हैं। सक्रिय व सजग रहने की आवश्यकता है।

"बिना संस्कार का जीवन कागज के फूल के समान है, संस्कारित व्यक्ति समाज का दर्पण है"

❖ ❖ ❖ ❖

"शिक्षा हमारे समाज की आत्मा है जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती है"

रातों–रात को चमत्कार नहीं होता–

मिट्टी से भी यारी रख, दिल से दिलदारी रख।
चोट न पहुँचे बातों से, इतनी सी समझदारी रख।।
पहचान हो तेरी हटकर के, ऐसी तू कलाकारी रख।
पल में जोश जवानी का, बुढ़ापे की तैयारी रख।।
मन सबसे मिलता नहीं, फिर भी जुबान प्यारी रख।
कम बोलें पर प्रत्यक्ष बोलें,
पक्ष बोलें या विपक्ष बोलें,
बस व्यक्ति के समक्ष बोलें।
कोशिश बिना सुधार नहीं होता।
प्रयत्न कभी बेकार नहीं होता।।
मेहनत से बदलती है किसमत की लकीरें।
रातों–रात कोई चमत्कार नहीं होता ।।

विचित्र ज्ञान

1. कछुआ 300 वर्ष तक जीता है।
2. तितली की आयु 60 दिन होती है।
3. अमेरिका में 6 इंच के बन्दर पाये जाते हैं।
4. मक्खियों की 46000 से भी ज्यादा प्रजातियाँ हैं।
5. विश्व में सबसे खतरनाक चिड़िया कैसोवरी है।
6. विश्व में 12642 किस्म के फूल हैं।
7. चींटी की पाँच नाकें होती हैं।
8. सोडियम को नकली सोना कहा जाता है।
9. साँप की पाँच नाकें होती हैं।
10. मधुमक्खियों की पाँच आँखें होती हैं।
11. घोड़ा एक मिनट में 12 बार साँस लेता है।
12. मानव एक मिनट में 12 से 18 बार साँस लेता है।

कारगिल विजय दिवस

चन्द्रपाल सिंह
पूर्व प्रधानाचार्य

कारगिल युद्ध जिसे आपरेशन विजय के नाम से भी जाना जाता है। भारत और पाकिस्तान के बीच मई से जुलाई 1999 के बीच कश्मीर के कारगिल जिले में हुए सशक्त संघर्ष का नाम है। 26 जुलाई 1999 को भारत ने कारगिल युद्ध में विजय हासिल की थी। इसकी घोषणा तत्कालीन भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री अटल बिहारी बाजपेयी ने की थी। इस दिन को प्रत्येक वर्ष विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है। कारगिल विजय दिवस स्वतंत्र भारत के सभी देशवासियों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है। यह विजय दिवस युद्ध में शहीद हुए भारतीय जवानों के सम्मान हेतु मनाया जाता है। लगभग 18 हजार फीट की ऊँचाई पर कारगिल में लड़ी गई जंग में देश ने लगभग 527 के ज्यादा वीर योद्धाओं को खोया था। वहीं 1300 से अधिक घायल हुए थे। वैसे तो पाकिस्तान ने इस युद्ध की शुरूआत 3 मई 1999 को ही कर दी थी जब उसने कारगिल की ऊँचाई पर 5000 सैनिकों के साथ घुसपैठ कर कब्जा जमा लिया था। इस बात की जानकारी जब भारत सरकार को मिली तो सेना ने पाक सैनिकों को खदेड़ने के लिए आपरेशन विजय चलाया। भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के खिलाफ मिग–27 और मिग–29 का भी इस्तेमाल किया। इसके बाद जहाँ पाकिस्तान ने कब्जा किया था वहीं पर बम गिराये गये। इसके अलावा मिग–29 की सहायता से पाकिस्तान के कई ठिकानों पर आर–77 मिसाइलों से हमला किया गया।

कश्मीर के कारगिल में नियंत्रण रेखा के जरिए घुसपैठ करने की साजिश के पीछे तत्कालीन पाकिस्तानी सैन्य प्रमुख परवेज मुसर्रफ को जिम्मेदार माना जाता है। दो महीने से ज्यादा चले इस युद्ध में भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को मार भगाया था और आखिरकार 26 जुलाई 1999 को आखिरी चोटी पर भी जीत पर ली गयी, यही दिन अब कारगिल वियज दिवस के रूप में मनाया जाता है।

आसान नही थी कारगिल की जंग। कुछ जॉबाज जवानों की बहादुरी और जज्बे की जानकारी मेहर सिंह ने छह पाकिस्तानी मारे तो कैप्टन बत्रा बोले–ये दिल मांगे मोर .....

युद्ध में वीर चक्र हासिल करने वाले नायब सूबेदार मेहर सिंह की यूनिट 1999 में सोपोर में तैनात थी। बिग्रेड कमाण्डर ने अचानक यूनिट को कारगिल युद्ध में शामिल होने का आदेश दिया। छह कमांडिंग ऑफिसर का सैनिक सम्मेलन 12 जून को हुआ तो पता चला कि हमको तोलो लिंग के आगे प्वाइंट 5140 के ऊपर कब्जा करना है। यूनिट द्रास पहुँची तो कैंप पर पाकिस्तान की आर्मी ने भारी आर्टी फायर किया। मेहर सिंह बताते है कि पत्थरों की आड़ में सारी रात गुजारी। हमारी ए और बी कम्पनी अपने टास्क को पूरा कर आगे बढ़ चली तो कमांडिंग ऑफिसर ले–कर्नल योगेश कुमार जोशी ने हमारे कम्पनी कमांडर कैप्टन विक्रम बत्रा को प्वाइंट 5140 पर कब्जा करने का निर्देश दिया। कम्पनी कमांडर कैप्टन विक्रम बत्रा ने अपनी कंपनी को एकत्र किया और कहा कि डेल्टा कंपनी के बहादुर जवानों आज यह मौका आ गया है, जिसका हमें इंतजार था। अपनी मातृ भूमि की रक्षा करने के लिये हमें खून भी बहाना पड़े

तो भी हमारी डेल्टा कम्पनी प्वाइंट 5140 के ऊपर कब्जा करेगी। हमने 19 जून 1999 को सुबह 4 बजे तोलोलिंग पहाड़ी से चढ़ना शुरू किया। एक सेक्शन को लेकर मेहर सिंह पाकिस्तानी बमबारी के बीच रात भर चलते हुए सुबह चार बजे दुश्मन के बंकर तक पहुँचे और बंकर में मौजूद पाकिस्तानी सैनिकों पर दुर्गे माँ की जयकार बोलते हुए टूट पड़े दुश्मन के साथ गुत्थम–गुत्था की लड़ाई हुई। पाकिस्तानी आर्मी के छह सैनिकों को मार कर प्वॉइंट 5140 पर कब्जा किया। पोस्ट पर कब्जा करने का मैसेज कैप्टन विक्रम बत्रा ने ले. कर्नल बाइ के जोशी को ये दिल मांगें मोर कहकर दिया। मश्कोह सेवियर बने लखनऊ के जांबाज मेजर रीतेश शर्मा।

रीतिश शर्मा लामार्टीनियर कॉलेज से पढ़ाई के बाद दिसम्बर 1995 को सेना में अफसर बने। वह 30 मई 1999 को 15 दिनों की छुट्टी के लिए घर आए थे। इस बीच सूचना मिली कि जाट रेजीमेण्ट के जवानों की पेट्रोलियम टुकड़ी को कारगिल में कोई खोज खबर नहीं मिली है। मेजर रीतेश अपनी 17 जाट रेजीमेण्ट लेकर पहुँच गए।

मेजर रीतेश ने चोटी संख्या 4875 पर तिरंगा लहराने के बाद पिंपल एक व पिंदल दो पर भी तिरंगा लहराया। 6 व 7 जुलाई की मध्य रात्रि मश्कोह घाटी में पाकिस्तानी की ओर से भीषण गोलाबारी हुई। इसमें मेजर शर्मा तो घायल हो गए लेकिन मेजर शर्मा ने अपनी कमान सेकेण्ड इन कमाण्ड कैप्टन अनुज नैयर को सौंपी। कैप्टन नैयर शहीद हुए और उनकी 17 जाट रेजीमेण्ट ने मश्कोह घाटी में तिरंगा लहरा दिया। उनकी यूनिट को इसके लिए मश्कोह सेवियर के खिताब से नवाजा गया।

कारगिल युद्ध के बाद 25 सितम्बर 1999 को कुपवाड़ा में आतंकी ऑपरेशन के दौरान वह घायल हो गए और नार्दन कमाण्ड अस्पताल में 6 अक्टूबर को उन्होंने अंतिम साँस ली।

कारगिल युद्ध में शहीद होने वाले लखनऊ के अमर शहीद –

1. सुनील जंग–इंफेंट्री गोरखा राइफल्स–15 मई 1999।

2. परमवीर मनोज पाण्डेय–गोरखा राइफल्स रेजीमेण्ट मरणोपरान्त सर्वोच्च परमवीर चक्र प्रदान किया गया।

3. कैप्टन आदित्य मिश्र–2 राजपूताना राइफल्स–19 जून, 1999।

4. लोस नायक केवलानन्द–कुमाऊँ शहादत–7 जून, 1999।

भारतीय सेना ने अदम्य साहस से जिस तरह कारगिल युद्ध में दुश्मन को खदेड़ा उस पर प्रत्येक भारतवासी को गर्व है।

न्याय प्रिय

शिवाजी के समक्ष एक बार उनके सैनिक किसी गाँव के मुखिया को पकड़ कर ले लाये। मुखिया बड़ी–घनी मूछों वाला बड़ा ही रसूखदार व्यक्ति था, पर आज उसपर एक विधवा की इज्जत लूटने का आरोप साबित हो चुका था। उस समय शिवाजी मात्र 14 वर्ष के थे, पर वह बड़े ही बहादुर, निडर और न्याय प्रिय थे और विशेषकर महिलाओं के प्रति उनके मन में असीम सम्मान था। उन्होंने तत्काल अपना निर्णय सुना दिया, "इसके दोनों हाथ और पैर काट दो, ऐसे जघन्य अपराध के लिए इससे कम कोई सजा नहीं हो सकती। शिवाजी जीवन पर्यन्त साहसिक कार्य करते रहे और गरीब, बेसहारा लोगों को हमेशा प्रेम और सम्मान देते रहे।

सिर नहीं झुका

शिवाजी के पिता का नाम शाहजी था। वह अक्सर युद्ध लड़ने के लिए घर से दूर रहते थे। इसलिए उन्हें शिवाजी के निडर और पराक्रमी होने का अधिक ज्ञान नहीं था। किसी अवसर पर वह शिवाजी को बीजापुर के सुलतान के दरबार में ले गए। शाहजी ने तीन बार झुककर सुलतान को सलाम किया और शिवाजी से भी ऐसा ही करने को कहा। लेकिन, शिवाजी अपना सर ऊपर उठाये सीधे खड़े रहे। विदेशी शासक के सामने वह किसी भी कीमत पर सर झुकाने को तैयार नहीं हुए। और शेर की तरह शान से चलते हुए दरबार से वापस चले गए।

शिशु के जीवन का शिल्पकार अविभावक

भारतीय संस्कृति में पितृ ऋण एवं मातृ ऋण की चर्चा सर्वत्र है। केवल सन्तान को जन्म देकर उससे मुक्त नहीं हो सकते। बच्चों का जन्म तो एक जीव विज्ञान की क्रिया है। वास्तव में बालक को जन्म देना जितना सरल है उतना ही अधिक कठिन है, उसको पाल–पोसकर सही दिशा देकर एक सच्चरित्र नागरिक बनाना।

बालक के व्यक्तित्व में उसकी शिक्षा–दीक्षा में माता–पिता का सर्वोपरि स्थान है। माता तो प्रथम गुरु ही कही जाती है। "माता हि प्रथमो गुरुः" कहकर हमारे शास्त्र माता की महिमा का उद्घोष करते हैं।

एकदम अबोध बालक जन्म लेते ही अपनी माता को ही पहचानता है। वास्तव में बालक की शिक्षा–दीक्षा तो उसके गर्भकाल में ही आरम्भ होती है। माँ अपने बालक को जैसा बनाना चाहती है, वह गर्भकाल में आरम्भ कर देती है। अभिमन्यु को वीर बनाने में उसकी माँ का पूरा–पूरा हाथ था। अभिमन्यु ने गर्भकाल में चक्रव्यूह भेदन की क्रिया को सीख लिया। भक्तराज प्रहलाद ने गर्भकाल में ही नारद जी के उपदेश से भक्ति मार्ग का ज्ञान कर लिया। मां के खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार का पूरा–पूरा दर्पण बालक ही होता है। जन्म लेते ही माँ अपने दूध के साथ–साथ अपने गुणों को भी पिलाती है। लोरियों के द्वारा उसका निर्माण करती है। उसकी चेष्टाओं को देखकर उसके मनगत भावों को समझती है। उसे परिवार का समाज का ज्ञान कराती है इसीलिए उसे प्रथम गुरु कहा गया है।

मानव समाज में सबसे बड़ा दायित्व स्त्री जाति के लिए मातृत्व का ही है। मां की भूमिका किसी बच्चे के विकास में उसी प्रकार महत्वपूर्ण है, जिस प्रकार विश्व को आलोकित करने के लिए सूर्य की। इस दायित्व निर्वहन के लिए नारी को पृथ्वी जैसा धैर्य और त्याग अङ्गीकार करना होगा। मातृत्व स्नेह का अटूट बन्धन है। बच्चा मां के वात्सल्य से ही सामाजिक धरातल पर अपने स्वरूप को विकसित करता है। कुछ भी जानने या सीखने के लिए बालक का पहला संवाद अपनी माता से ही होता है। बाल्यावस्था में माता जिस प्रकार की प्रवृत्तियां आदतें तथा सोच के बीज बच्चे के स्मृति पटल पर रोपती है वही शाखा प्रशाखाओं, फूल फल, पत्ती रूपी विचारों के रूप में उसके जीवन में प्रकट होते रहते हैं।

मातृत्व ही नारी जीवन का गौरव है किन्तु बालक उसकी मिल्कियत नहीं है। बच्चों के ऊपर मां अपनी नकारात्मक सोच थोपेगी तो बच्चे का वास्तविक विकास नहीं हो पायेगा। बच्चों में आचरण के विकास के लिए माता–पिता को बोलचाल में शिष्ट शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए। उनके प्रति आदर का प्रदर्शन करने से उनकी सोच समाज के प्रति सकारात्मक होगी। विद्यालय में भैया/बहिन/आप आदि शब्दावली का प्रयोग सिखाकर आचार्यगण उन्हें शिष्ट बनाना चाहते हैं, परन्तु यदि परिवेश में उन्हें शिष्ट शब्दों के प्रयोग की आदत नहीं डाली गई तो उनका भाषागत शिष्ट शब्दों का प्रयोग वास्तविक जीवन में नहीं उतर पायेगा।

बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए उनके माता–पिता को कई प्रकार के दायित्वों का निर्वहन करना पड़ेगा। प्रतिभाशाली सुयोग्य एवं स्वस्थ बच्चे आज प्रत्येक माता–पिता का सपना है। वस्तुतः प्रतिभा का सीधा तात्पर्य है "सफलता सफलता के लिए आवश्यक है साधना। वस्तुतः सफलता साधना रूपी संघर्ष के बिना नहीं मिलती साधना सब्र मांगती है। संघर्ष पूर्ण कर्मयोगी जीवन की शिक्षा बालक के माता–पिता ही दे सकते हैं। सफलता के ताले संघर्ष की चाबी से ही खुलते हैं। इसलिए माता–पिता को चाहिए कि वे बालक को हतोत्साहित न होने दें। निरन्तर संघर्ष कठोर परिश्रम की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देते रहें।

सामाजिक जीवन जीने के लिए बालक में क्षमताओं का विकास करना भी माता–पिता का दायित्व है। बालक का रूझान किस कार्य के प्रति है। यदि

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के आधार पर उसे वह दिशा दी जायेगी तो वह निश्चित ही सफल होगा।

किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए बालक का दृढ़ संकल्प युक्त होना आवश्यक है। माता ने बालक को सत्य बोलने की शिक्षा दी और उसके मन को इतना मजबूत, इतना दृढ़ संकल्पित कर दिया वह डकैतों के सरदार के सामने भी सच बोलने से नहीं हिचकिचाया सरदार ने पूछा "तुम्हारे पास कुछ है" बालक ने उत्तर दिया– "मेरे पास चालीस सोने की अशरफियां है।" और सदरी फाडकर अशरफियाँ सरदारके सामने रख दीं।

दृढ़ निश्चय से ही बालक में आत्मविश्वास पैदा होता है आत्म विश्वास के बिना व्यक्ति अपने कार्य में सफल नहीं होता। मुरारजी देसाई आई.ए.एस. परीक्षा का साक्षात्कार दे रहे थे। उनसे पूछा गया –"यदि आप चुने नहीं गये तो क्या आप उदास हो जायेंगे ?" उन्होंने उत्तर दिया–"इसमें उदास होने जैसी कोई बात ही नहीं है, 'अभी संसार में अनेक कार्य मेरे सम्मुख हैं" उत्तर सुनते ही चयन कर्ता ने उनका चयन कर लिया।

व्यवहार कुशलता भी बालक माता–पिता के सान्निध्य में ही सीखता है। यदि परिवार में सद्व्यवहार का ज्ञान बालक को हो गया तो वही रामकृष्ण जैसे उच्च आदर्शों को प्राप्त कर सकेगा। जैस कि कहा गया है– "व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।"

बालक में सौन्दर्य बोध एवं कलात्मक अभिरूचि का विकास भी पारिवारिक परिवेश में ही होता है, वे माता–पिता जिन्हें अपने नटखट बच्चो में किसी न किसी कलात्मक प्रकृति के लक्षण प्रतीत होते हैं वे उन्हें सही दिशा में मार्गदर्शन देकर पल्लवित पुष्पित करने में समर्थ होते हैं। अतः माता–पिता को अपने सूक्ष्म निरीक्षण द्वारा उनकी सुप्त बीज रूपा प्रवृत्ति का ज्ञान कर सही दिशा देनी चाहिए।

माता–पिता को चाहिए कि वे अपने बालकों को हीनभावना की काली छाया से दूर रखें। बहुत से मात–पिता बच्चे को कोसने, कलपने की आदत बना लेते हैं। उनसे बात–बात में अभद्र शब्दों का प्रयोग करते हैं। समझाने के स्थान पर बात–बात में फटकारते रहते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि बच्चे का मानसिक एवं बौद्धिक विकास रूक जाता है तथा बालक हीन भावना से ग्रसित हो जाता है।

हीन भावना से ग्रसित बालक संवाद हीनता का शिकार हो जाता है। वह किसी से बातचीत करने में कतराता है। माता–पिता को चाहिए कि वे बालक को उसके अस्तित्व का ज्ञान करायें तथा उन्हें अपने विचारों, को व्यक्त करने के लिए उत्साहित करें। उनकी कमियों को प्रेम से समझायें। संवाद क्षमता में निखार आने हेतु बालक विद्यालय में होने वाले समारोहों एवं प्रतियोगिताओं में अपने विचारों को प्रकट कर सफलता के सोपानों पर चढ़ने में सफल होते हैं इसका तरीका यही है कि माता–पिता किसी पौराणिक ऐतिहासिक आख्यान को अपनी सरल भाषा में बालक को सुनायें और पुनः प्रेमपूर्वक उससे उसे सुनें। इससे बालक मे आत्म विश्वास पैदा होगा और एक आदर्श नागरिक के रूप में समाज के सामने आयेगा।

प्रत्येक माता–पिता की एक कामना होती है कि–हे बालक! तेरा मन सुविकसित हो तेरी वाणी सुविकसित हो। तेरा प्राण सुविकसित हो तेरा नेत्र सुविकसित हो तेरा क्षेत्र सुविकसित हो। तेरे स्वभाव से क्रूरता बाहर निकल जाय और तू शुद्ध तथा पवित्र हो जाय।

अनमोल ज्ञान

ज्ञान के मंच पर
सब एक समान हैं।
विधि का विधान पलट दे
वो ब्रह्मास्त्र ज्ञान है।
तो आज से ये ठान लें,
ये बात गाँठ बाँध लें।
कि कर्म के कुरुक्षेत्र में..
ना रूप काम आता है,
न झूठ काम आता है,
न जाति काम आती है
न बाप का नाम काम आता है,
सिर्फ ज्ञान ही आपको
आपका हक दिलाता है।

वेदों में पर्यावरणीय अवधारणा

महेन्द्रनाथ श्रीवास्तव

भारतीय संस्कृति में 'प्रणव श्रोत' वेद हैं। जिन्हें हजारों वर्ष पहले अनेक मनीषियों ने संयुक्त तत्वावधान में प्राकृतिक सुरम्य वातावरण में सृजित किया है। यद्यपि जब वेदों का सृजन हुआ उस काल में पर्यावरण में किसी प्रकार के विजातीय तत्व प्रदूषण आदि नहीं थे लेकिन हमारे दूरदृष्टा मनीषियों ने पर्यावरण के प्रदूषित होने की सम्भावना के कारण वेदों में पर्यावरण सम्बन्धी अनेक श्लोकों, ऋचाओं व दृष्टान्तों का समावेशन किया।

वेदों में पर्यावरण सम्बन्धित ऋचाएँ यथास्थान प्रसंगवश सन्दर्भित हैं। ऋग्वेद में पर्यावरण से सम्बन्धित सूक्तों की व्याख्या स्पष्ट है। अथर्ववेद में सभी पंचमहाभूतों (क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर) की प्राकृतिक विशेषताओं और उनकी क्रियाशीलता का विशद वर्णन है। ऋग्वेद में वर्णित पर्यावरण एवं जल की महत्ता से सम्बन्धित मंत्र इस प्रकार है–'अप्सु अन्तः अमृत अप्सु भेजस्य'। इसका तात्पर्य है कि शुद्ध जल अमृत के समान है, उसमें औषधीय गुण विद्यमान रहते हैं । अतः जल को शुद्ध बनाए रखने की आवश्यकता है। इससे हमें जल की शुद्धता को बनाए रखने और जल प्रदूषण से विरत रहने की प्रेरणा मिलती है।

ऋग्वेद में शुद्ध वायु के गुणों को बताते हुए लिखा गया है कि शुद्ध और ताजी वायु अमूल्य औषधि है जो जीव– जगत के लिए दवा के समान उपयोगी व आनन्ददायक है। शुद्ध जल हमारी आयु को बढ़ाता । अथर्ववेद के अनुसार पृथ्वी का हृदय आकाश को माना गया है। आकाश से ही पृथ्वी को शक्ति प्राप्त होती है। गगन अर्थात आकाश पृथ्वी को चारों ओर से अपने आलिंगन से आच्छादित किए हुए है। इसकी संकल्पना अथर्ववेद में इस प्रकार से की गई है :–

'पृथ्वीप्रो महिषो नाथमानस्य गातुरदचक्षुः परि विश्रवं बभूव।' इसका तात्पर्य यह है कि अन्तरिक्ष में अवस्थित ओजोनपरत को हानिकारक गैसों से नुकसान पहुँचने पर पृथ्वी के हृदय को चोट पहुँचती है। वेदों में पर्यावरणीय क्षति से होने वाली हानियों के बारे में भी चेतावनी देते हुए लिखा है– पर्यावरण नाशेन नश्यति सर्वजन्तवः । पवनः दुष्टतांयाति प्रकृतिविकृतायते । अर्थात पर्यावरण के प्रदूषित होने से सभी प्राणी नष्ट हो जाते हैं। वायु दुष्टता को प्राप्त होती है जिससे मनुष्य को प्राकृतिक आपदाओं के रूप में इसके दुष्परिणाम भुगतने होते हैं।

पृथ्वी से फसल प्राप्त करने और खनिज प्राप्त करने में प्रयुक्त संसाधनों के साथ ही आधिक्य प्राप्ति की लालसा से पृथ्वी का वास्तविक पर्यावरण खराब हो जाता है। इसके लिए अथर्ववेद में सचेत करते हुए कहा गया है कि पृथ्वी से आवश्यकता की सभी वस्तुएँ प्राप्त होंगी परन्तु वह असीमित लालसा की पूर्ति नहीं कर सकती है। यही नहीं यजुर्वेद में जैव विविधता पर चर्चा करते हुए लिखा है कि–'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।' अर्थात् इस जगत के सभी जीवों, सभी प्राणियों के प्रति सहृदयता रखना और उनके प्रति श्रद्धापूर्वक मित्रवत् आचरण करना ही जीवन का लक्ष्य है। वेदों में पर्यावरण सन्तुलन के महत्व को भी अनेक प्रसंगों में वर्णित किया गया है। वेदों में वायु की जीवनदायिनी शक्ति की महत्ता को प्रतिपादित किया गया है। इसके लिए किसी तरह के प्रदूषण से मुक्त, स्वच्छ एवं निर्मल वायु को महत्वपूर्ण मानकर सम्पूर्ण पर्यावरण को सन्तुलित रखने का भाव व्यक्त किया गया है।

वेदों में वायु की स्तुति की गई है, जिससे जीवों का निरन्तर सम्यक प्रकार से विकास होता रहे। वस्तुतः यदि वायु ही प्रदूषित होगी तब उस प्रदूषित वायु से स्वस्थ जीवन की कल्पना कैसे की जा सकती है। इसीलिए ऋग्वेद में आशीर्वादात्मक कथन है कि–'पृथ्वीः पूः च उर्वीभव।' इसका तात्पर्य यह है कि हमारी पृथ्वी का सम्पूर्ण वातावरण शुद्ध रहे। नदी, पर्वत, वन, उपवन, वायु आदि सभी स्वच्छ और निर्मल रहें। पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी मनुष्यों, पेड़–पौधों और पशु पक्षियों को स्वच्छ और उत्तम वातावरण प्राप्त हो। सुखी और खुशहाल जीवन के लिए सभी को पर्यावरण की अनुकूलता प्राप्त हो, ऐसी कामना वेदों में की गई है। परन्तु इस प्रकार के खुशहाल और स्वस्थ जीवन के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की सुरक्षा का संकल्प लेना होगा।

पर्यावरण

देवेन्द्र नाथ तिवारी
पूर्व प्रधानाचार्य

पर्यावरण शब्द का निर्माण दो शब्दों से मिल कर हुआ है ''परि'' जो हमारे चारो ओर है ''आवरण'' जो हमें चारो ओर से घेरे हुए हैं, अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है चारों ओर से घेरे हुए। पर्यावरण वह हैं जो कि प्रत्येक जीव के साथ जुड़ा हैं, हमारे चारो ओर वह हमेशा व्याप्त होता है, और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी के अन्दर सम्पादित होती हैं, तथा हम मनुष्य अपनी समस्त क्रियाओं से इस पर्यावरण को भी प्रभावित करते हैं।

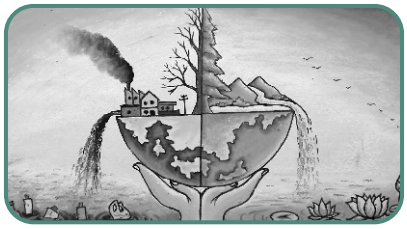

पर्यावरण के जैविक संघटकों में सूक्ष्म जीवाणु से लेकर कीड़े–मकोड़े, सभी जीव–जन्तु और पेड़–पौधे आ जाते है, और इसके साथ ही उनसे जुड़ी सारी जैव क्रियाएं और प्रक्रियाएं भी आती है, अजैविक संघटकों में जीवन रहित तत्व और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएं आती है, जैसे चट्टानें, नदी, पर्वत, हवा और जलवायु के तत्व इत्यादि।

सामान्य रूप से पर्यावररण को मनुष्य के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। मनुष्य को एक अलग इकाई और उसके चारों ओर व्याप्त अन्य समस्त चीजों को उसका पर्यावरण घोषित कर दिया जाता है। जबकि मनुष्य भी पर्यावरण से अलग नहीं है। मनुष्य भी उसका एक हिस्सा है। तकनीकी मानव द्वारा आर्थिक उद्देश्य और जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रकृति के साथ व्यापक छेड़–छाड़ के क्रिया कलापों में प्राकृतिक पर्यावरण का संतुलन नष्ट किया है जिससे प्राकृतिक अवस्था या प्रणाली के अस्तित्व पर ही संकट उत्पन्न हो गया है।

पर्यावरणीय समास्याएँ जैसे प्रदूषण जलवायु परिवर्तन इत्यादि मनुष्य को अपनी जीवन शैली के बारे में पुनर्विचार के लिए प्रेरित कर रही हैं और अब पर्यावरण संरक्षण और पर्यावरण प्रबंधन की चर्चा है। मनुष्य वैज्ञानिक और तकनीकी रूप से अपने द्वारा किए गए परिवर्तनों से नुकसान को कितना कम कने में सक्षम है? आर्थिक और राजनैतिक हितों की टकराव में पर्यावरण पर कितना ध्यान दिया जा रहा है ? मनुष्य अपने पर्यावरण के प्रति कितना जागरूक है ? यह आज के ज्वलंत प्रश्न है।

पर्यावरण का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है अपने परिवेश में हम तरह–तरह के जीव–जन्तु पैड़–पौधे तथा सजीव–निर्जीव वस्तुएं पाते है और सब मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। विज्ञान की विभिन्न शाखओं जैसे भौतिक विज्ञान, रसायनिक विज्ञान तथा जीव विज्ञान आदि में विषय के मौलिक सिद्धान्तों तथा उससे सम्बधित प्रयोगिक विषयों का अध्ययन किया जाता है परन्तु आज की आवश्यकता है कि पर्यावरण के विस्तृत अध्ययन के साथ–साथ इससे सम्बन्धित व्यवहारिक ज्ञान पर बल दिया जाय। आधुनिक समाज को पर्यावरण से सम्बन्धित समस्याओं की शिक्षा व्यापक स्तर पर दी जानी चाहिए।

पर्यावरण प्रदूषण के कारक–

1. जल, प्रदूषण 2. वायु प्रदूषण, 3. ध्वनि प्रदूषिण, 4. रेडियो धर्मी प्रदूषण, 5. रसायनिक प्रदूषण। इन सभी से होने वाली हानियों, समस्याओं के निवारण की शिक्षा एवं जानकारी सम्पूर्ण व्यापक स्तर पर की जानी चाहिए।

भारत केन्द्रित ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है

प्रो. डॉ. प्रवेश कुमार

भारत के ज्ञान दर्शन, संस्कृति को लेकर पिछले कई वर्षों में दुनिया की दृष्टि में परिवर्तन आया है, वही सरकार द्वारा नई शिक्षा नीति के माध्यम से बार–बार भारत केन्द्रित शिक्षा नीति जैसे विचार को आम जनमानस में लेकर जाने से देश और विदेश में भारत और उसकी ज्ञान परम्परा को जानने और समझाने को लेकर रुचि बढ़ी है। मैं अपने विद्यार्थी जीवन में राजनीतिक शास्त्र का छात्र रहा इसलिए इसी विषय की तमाम पुस्तकों को पढ़ने का अवसर मुझे मिलता रहा। अपने विद्यार्थी जीवन में तमाम शिक्षकों के लेक्चर सुने इन लेक्चरों में अकसर पश्चिम के दर्शनिकों के बारे में ही सुना।

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में तो हम कौटिल्य को पढ़ लेते थे लेकिन क्या हमने भीष्म, शुक्र, नारद या फिर रामराज्य की व्यवस्था को जाना और समझा तो ऐसा नहीं। जब भी लोकतंत्र को समझा तो या जाना की ग्रीक, एथिस और स्पार्ट के नगर राज्यों से निकल कर ही लोकतंत्र दुनिया के देशों में गया। जब भी समानता की बात हुई तो फ्रांसीसी क्रांति को बताया गया कि इस क्रांति से स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे शब्द उपजे है। अच्छा जब भी राष्ट्र को जानने और समझने की कोशिश की तो समझा की यह ही नेशन है और इससे उपजा नेशनल्जिम ही असल में राष्ट्र है। हमारे धर्म को भी हमें अंग्रेजी के रिलिजन का अनुवाद बता के वर्षों समझाया गया। वही भारत के हिन्दू तत्व को असमानता के पक्षकार के रूप में प्रस्तुत किया गया, यह हिन्दू समाज तो समता, न्याय का धोर विरोधी हैं अगर मूल में जाए तो यह स्थापित करने का प्रयास हुआ कि भारत यानि कुछ नहीं हम जानते ही हैं की दुनिया में अंग्रेजी बौद्धिक जमात द्वारा 'वाइट मेन बर्डन थ्योरी' तक दी गई। जिसका अर्थ की भारत के जाहिल समाज को ज्ञान और शिक्षा देने का भार या दायित्व हम अंग्रेजो पर ही है। भारत तो कभी नेशन था ही नहीं उसे अंग्रेजों ने एक किया हो सच हो सकता जिस परिभाषा को अंग्रेज नेशन में समाहित करते उसके अनुसार हम कैसे आ सकते है।

मैं कई वर्षों से छात्रों को राजनीतिक विज्ञान पढ़ा रहा हूँ, ऐसे कई प्रश्नों से मैं भी अपने छात्र जीवन में रूबरू होता रहा हूँ। आज भी देशभर के छात्र में इन अर्मिनोलॉजी को लेकर एक ऊहापोह ही स्थिति है। हमें आज इन्हें जान और समझ लेना चाहिए जो राजनीति–विज्ञान के छात्र वर्षों से 'नेशन' को राष्ट्र समझने की भूल करते रहे है। वास्तव में पश्चिम का 'नेशन' भौतिक धारणा पर आधारित है जो भारत का राष्ट्र हो ही नहीं सकता।

इसलिए वहाँ के 'नेशन' के जन्म और उससे उपजे 'नेशनलिज्म' ने दुनिया में भय, आतंक, साम्राज्यवाद आदि को फैलाया, जबकि हमारे राष्ट्र की पूरी अवधारणा ही भिन्न है। हमारे राष्ट्र का जन्म कोई भौतिक पदार्थों के नियंत्रण हेतु नहीं हुआ बल्कि ऋषियों को सामूहिक कल्याण की इच्छा का परिणाम है हमारा राष्ट्र। अथर्ववेद का मंत्र 19/41/1 कहता हे कि 'भद्रं इच्छा ऋषिया स्वर्वविध तपो दिक्षमुपासेधु अग्रे, ततो राष्ट्रं बलमोजशा जात ततसमी देवा उपासम नमन्तु' यानि की हमारा राष्ट्र तो सद्इच्छा के परिणाम स्वरूप जन्म लेता है। इसलिए हमारे राष्ट्रतत्व, राष्ट्रभाव ने दुनिया में किसी संघर्ष को नहीं पैदा किया, बल्कि 'वसुधैव कुटुंबकमृ' कहकर दुनिया को एक 'कुटुंब' के रूप में देखां ये कुटुंब अंग्रेजी भाषा का फैमली नही है, जिसमें केवल माता–पिता, और पुत्र–पुत्री ही शामिल हों।

हमारे यहाँ तो दादा, दादी, चाचा–चाची ये सब एक की कुटुंब के माने जाते हैं। हमारे राष्ट्र की अवधारणा हमारे सनातन हिन्दू संस्कृति से उपजा हुआ विचार है, जो अपने–आप में 'समावेशी' है। जो सभी को अपने भीतर समाहित करता है। हमारे अचार–विचार, खान–पान, किसी भी आधार पर भिन्न ही क्यों न हों

लेकिन हमारी हिन्दू संस्कृति उनकी 'अस्मिता' को अपने भीतर समाहित किए हुए हैं। इसी प्रकार लोकतंत्र को लेकर मन में सदैव रहता है कि ये तो ग्रीक नगर राज्यों से आया है। लेकिन हम खुद जाने की दुनिया का प्राचीनतम ग्रंथ है 'ऋग्वेद' इसमें तो सभा, समिति, गण आदि का वर्णन आता है यानि ये व्यवस्था भारत में थी 16 महाजनपद की बात हम करते है।

सभा जहाँ सामान्य सभा जिसमें जनता, जनता के द्वारा सीधे लोग शामिल होते है वही समिति है जिसमें इन सभा के चयनित लोगों द्वारा समिति का चयन किया जाता है। हमारे तो कुटुंब ही लोकतांत्रिक व्यवस्था के सबसे आसानी से दिए जाने वाले उद्धारण है। इसी प्रकार से पश्चिम का रिलिजन क्या है ? क्या यह कभी हमारा धर्म हो सकता है ? तो ऐसा नहीं, क्योंकि 'रिलिजन' की परिभाषा बड़ी ही संकुचित है, जिसमें हम किसी एक पूजा पद्धति, एक ईश्वर की साधना और एक ही पवित्र पुस्तक को अपने ईश्वर का संदेश मान लेते हैं। अगर हम ऐसा करते हैं तो किसी अन्य पूजा विधि को मानने वाले लोगों को हम अपने से अलग मान लेते हैं और उसे अपने जैसा बनने का प्रयास करते हैं। रिलिजन अपने–आप में एक 'एकांगी' दृष्टि रखता है, जिसमें सब जैसा वो है वैसा ही दिखे, इस पर विश्वास करता है इसलिये ये पूरा विचार ही अपने में 'डिस्टर्व' है। वहीं धर्म की अवधारणा किसी भी प्रकार के एकांगी दृष्टि का प्रतिपादन नहीं करता, बल्कि वो 'बहुआयामी' है। जिसमें एक व्यक्ति को जीवन कैसे जीना चाहिए, जिसमें उसका अधिकतम कल्याण हो उसे अधिकतम सुख, आनंद मिले वहीं समाज भी उसी के भांति आनंद को प्राप्त करे, ऐसी सद इच्छा ही धर्म है। ये धर्म का विचार अपनी संकल्पना में केवल मानव–जीवन को ही समाहित नहीं करता है, अपितु इस चराचर संसार में विद्यमान सभी वनस्पति, जीव–जन्तु का भी कल्याण हो ये भी अभीष्ट रखता है। भारत में धर्म को तमाम ऋषियों ने बताया है जिसमें मनु द्वारा निर्धारित धर्म के दस नियम बड़े ही सटीक हैं, जो मानव–जीवन को उन्नत बनाने में सार्थक सिद्ध होते हैं। मनुस्मृति का श्लोक धर्म को बड़ी ही आसानी से बताता है–'धृतिक्षमादमो एस्तेयम् शौचमिंद्रीयनिग्रहाः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्' इसे हिन्दी के अर्थ में जाना जाए तो मनु कहता है कि व्यक्ति को अपने चित्त की स्थिरता रखनी चाहिए वही सामर्थ्य होते हुए भी क्षमा करने की वृति होनी चाहिए, किसी की भी अर्जित संपति न लेना, अस्सेय का अर्थ चोरी न करना, शौच अर्थात व्यक्ति को अपने अचार–विचार की शुद्धता रखना, वही इंद्रियनिग्रहा से अर्थ है कि व्यक्ति ने अपनी इंद्रियों को अपने नियंत्रण में रखना, अधोगति से रोकना, मन पर संयम वही अपनी बुद्धि का विवेकानुसार प्रयोग में लाना, ज्ञान विद्या को जीवन, जगत एवं ईश्वर संबंधी सारी जानकारी करना, अपने जीवन में सत्य को फलीभूत करना, अपने मन के विपरीत घटित होने पर भी व्यक्ति को अपने आचरण में क्रोध न आने देना, ये धर्म के लक्षण है।

इसी तरह महाभारत में धर्म को बताया गया जहाँ धर्म को 'समाज में संतुलन' बनाने वाला माना गया है। धर्म वे नियम है, जो समाज में नैतिक और आध्यात्मिक निर्देश का जहाँ सूत्रपात करते हैं वही कानून और प्रथाओं को भी परिभाषित करते हैं। महाभारत तो जहां राजा, शासक के 'राजधर्म' की बात करता है वही जनता का 'प्रजाधर्म' एवं किसी साथी के साथ 'मित्रधर्म' की बात भी करता है। वही धर्म को भगवान बुद्ध भी परिभाषित करते हैं, वे कहते हैं कि व्यक्ति के जीवन में शील का होना उसका चेतना से युक्त होना समाधि वही नया–नया जानने की प्रज्ञा एवं अंततः निर्वाण को प्राप्त करना ये निर्वाण भौतिक शरीर में भी संभव है, यही धर्म है। वहीं हिन्दू वैदिक साहित्य में चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की बात की गई। इन सब में संतुलन करने का कार्य ही तो धर्म है। हमारे यहाँ नैतिकता के अर्थ में भी धर्म को जाना और समझा जाता है। धर्म व्यक्ति के आचरण के नियम है जो व्यक्ति का समाज के साथ अंतः संबंध को परिभाषित करती है वही व्यक्ति कैसे अपने अन्तिम पड़ाव मोक्ष या परिनिर्वाण को प्राप्त करें इसे भी बताती है। वही रिलिजन व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत आचरण मात्र से जुड़ा है, जिसका बाहरी दुनिया से क्या लेना कोई पूजा करता है ये उसका व्यक्तिगत मामला है। इसीलिए हमारे धर्म की अवधारणा में पूजा पद्धति को व्यकित का व्यक्तिगत विषय ही माना गया, इसलिए कितने ही पंथ संप्रदाय होते भी भारत की देव–भूमि पर कोई संघर्ष नहीं हुआ। वहीं पश्चिम के अब्रह्मिक

.....पेज 17 पर शेष भाग

राष्ट्रीय ध्वज की ऐतिहासिकता

वर्तमान समय में जिस राष्ट्रध्वज को हम स्वीकार किये हुए है उसका एक ऐतिहासिक सफर है, जो सन 1906 माह अगस्त से प्रारम्भ हुआ था सबसे पहले हरे, पीले एवं लाल रंग की कुल तीन पट्टियों से यह बना ध्वज ही कोलकाता के पारसी बगान में फहराया गया था। इस ध्वज की ऊपर की हरी पट्टी पर एक ही पंक्ति में सफेद रंग के आठ कमल बनाये गये थे, जबकि बीच वाली पट्टी पर देवनागरी लिपि में पूर्ण गहरे रंग 'नीले से 'वन्देमातरम' लिखा था। सबसे नीचे लाल पट्टी पर बायीं ओर एक सफेद सूर्य और दायीं ओर एक–एक सफेद चन्द्रमा और तारा अंकित थे।

यह ध्वज भारत की सभी धर्मों एवं सम्प्रदायों की भावना एवं सामाजिक सद्भावना को ध्यान रखते हुए तैयार किया गया था, लेकिन यह ध्वज सर्वमान्य नहीं हुआ।

सन् 1917 में श्रीमती एनीवेसेन्ट और लोकमान्य तिलक द्वारा होमरुल आन्दोलन चलाया गया। उस समय एक नये ध्वज की परिकल्पना की गयी। जिसमें लाल एवं हरे रंग की एक के बाद कुल नौ समान्तर और तिरछी पट्टीयाँ थी। ध्वज के बीचोबीच सात तारे थे, और एक कोने में चाँद तथा तारा अंकित किये गये थे। इसके बायीं ऊपर की ओर कोने में 'युनियन जैक' का चित्र एक चौथाई भाग में बनाया गया था जिसके कारण यह ध्वज विरोध का रूप बन गया तथा इसे अस्वीकृत कर दिया गया। उस समय अधिकांश लोगों का मत था कि अगर 'युनियन जैक' का चित्र बना हुआ ध्वज स्वीकार किया गया तो आम लोगों में इसका गलत संदेश जायेगा तथा लोग यह मान बैठेंगे कि भारतीय समाज की ब्रिटिश सम्प्रभुता के प्रति स्वीकृति है।

इसी क्रम में एक ऐसे ध्वज की आवश्यकता महसूस की गयी जो केवल प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय और विचारधाराओं के लोगों का प्रतीक बन सके, वरन सम्पूर्ण देशवासियों के लिए करो–मरो का आदर्श भी हो। सन् 1921 में विजयवाड़ा के कांग्रेस के अधिवेशन में पिंग्लेबेक आध्या नामक एक क्रांतिकारी युवक ने गांधीजी को एक ऐसा ध्वज भेंट किया था, जिसमें लाल एवं हरे रंग की केवल दो पट्टीयाँ थी लेकिन उस समय पंजाब के एक बुजुर्ग नेता पं. रायजादा ने गाँधीजी को सुझाव दिया कि इसमें चरखे को भी स्थान दिया जाय, गांधीजी ने पंडित रायजादा की बात को स्वीकार करते हुए हिन्दुओं के लिए केसरिया रंग, मुस्लिगों के लिए हरा रंग एवं अन्य धर्मो के लोगों के लिए सफेद रंग भी शामिल किया।

31 दिसम्बर 1929 को रावी नदी के तट पर इसी तिरंगे झण्डे को फहराते हुए पूर्ण स्वतन्त्रता की मांग की गयी। लेकिन उस समय इस ध्वज को धर्मों सम्प्रदाय व जातियों से जोड़ने के कारण लोगों ने गांधीजी का विरोध, किया। सन् 1931 में ध्वज के स्वरूप निर्धारण के लिए कराची में कांग्रेस ने सात लोगों की एक समिति बनाई तथा चरखे को स्थान देने का सुझाव भी दिया। लेकिन कांग्रेस में ही कुछ लोगों ने इसे अस्वीकार कर दिया।

पं. नेहरू के नेतृतव में कांग्रेस के वरिष्ठ लोगों की बैठक हुई, बैठक में सर्वसम्मति से तिरंगे ध्वज की ही बीच की सफेद पट्टी में चरखे के स्वरूप की मान्यता प्रदान की गयी। लेकिन इस ध्वज में तीनों पट्टियों के रंगों का धम–सम्प्रदायों से जोड़ने पर बल देकर इसके गुणों से रंगों को जोड़ना सर्वसम्मति से स्वीकृत हो गया। ध्वज का आकार लम्बाई और चौड़ाई में 3.2 रखा गया।

सन् 1924 में आजादी के लिए संघर्षरत श्यामलाल गुप्ता ने झण्डा गीत के रूप में 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा.....' की रचना की। महात्मा गांधी ने इस गीत के अन्त के कुछ अन्तराओं को हटाकर इसे स्वीकार कर लिया पहली बार 1925 में कानपुर में कांग्रेस के अभिवेशन में गाया गया। बाद में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भी इसे एक लाख लोगों के साथ गाया। शीघ्र ही क्रान्तिकारीयों का यह प्रिय गीत बन गया। फिर यह

राष्ट्र के प्रत्येक कार्यक्रम जैसे आन्दोलन, प्रभात फेरी में बड़े ही लोकप्रियता के साथ गाया जाता था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा की बैठक में पं. जवाहरलाल नेहरू ने चरखे की जगह देश की प्रगति राष्ट्र के कानून और धर्म के पहिये के प्रतीक 24 तीलियाँ वाले अशोक चक्र को रखने का सुझाव दिया जिसे संविधान सभा ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी।

इसी दिन से तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार कर लिया गया। इस प्रकार हमारे राष्ट्रीय ध्वज को वर्तमान स्वरूप में आने में कुल 40 वर्ष 11 माह 16 दिन ऐतिहासिक सफर तय करना पड़ा।

समरसता वह लायेंगे

जनसेवा यह ईश्वर भक्ति, बोध इसी का समझायें।
निर्भयता से बंधुभाव का, नाता सबको बतलायें ।।

कालचक्र में अब भी बाकी दीवारें जाति–पाति की।
अनेक जाति पंथ गुटों ने, घर ली राहें भेदों की।।
भेद भुलाकर बंध तोड़कर, समरसता वह लायें।
निर्भयता से बंधुभाव का, नाता सबको बतलायें।।

ग्रामवासी या नगर निवासी, है कोई फिर वनवासी।
एक संस्कृति अमर हमारी, जोड़े जीवनधारा से ।।
कालचक्र की गति पर नूतन गाथा एक रचायेंगे।
निर्भयता से बंधुभाव का, नाता सबको बतलायेंगे ।।

दुर्बल कोई यहां न अब हो, मन में यह निर्भर करें।
समाज अपना समरथ करने, कर्म और विश्वास जगायें।
उन्नति की अब भोर हुई है प्रकाशमय हम बन जाएं।
निर्भयता से बंधुभाव का, नाता सबको बतलायें ।।

जनसेवा यह ईश्वर भक्ति, बोध इसी का समझायें।
निर्भयता से बंधुभाव का, नाता सबको बतलायें ।।

देने का आनन्द

यह घटना उन दिनों की है, जब स्वामी विवेकानन्द अमेरिका में एक महिला के घर ठहरे हुए थे। एक दिन स्वामी जी भ्रमण व सम्भाषणों के उपरान्त बहुत थके हुए लौटे। लौटकर उन्होंने अपना भोजन बनाया। अभी वे अपना भोजन शुरू कर पाते, इससे पहले कुछ बच्चे उनके पास आ गये। बच्चे भूखे थे। स्वामी जी ने तुरन्त अपना भोजन बच्चों में बाँट दिया।

घर की मालकिन वह महिला पास बैठी इस घटना को बड़े आश्चर्य से देख रही थी। उसने पूछा, स्वामी जी ! आपने सारा भोजन तो बच्चों को दे दिया, अब आप क्या खायेंगे ? स्वामी जी मुस्कुराते हुए बोले, "बहन ! भोजन का काम तो भूख मिटाना है, इस पेट की नहीं तो उस पेट की सही। वैसे भी देने का आनन्द पाने के आनन्द से कहीं ज्यादा है।"" महापुरुष अपने इन्हीं गुणों के आधार पर पहचाने जाते हैं।

एक आदर्श माँ : भुवनेश्वरी देवी

पति के अनुरूप ही भुवनेश्वरी देवी मधुर कण्ठ और उदारता रखती थी। वे जैसी सुन्दरी थीं, उसी प्रकार उनमें एक कुलीनता टपकती रहती थी। वे विशेष बुद्धिमती, कार्यकुशल तथा भक्तिपरायण थीं। पारिवारिक सारे कार्यों का संचालन सुन्दर रीति से करते हुए उन्हें पढ़ने–लिखने, सिलाई–कढ़ाई और पास–पड़ोसियों के सुख–दुःख को सुनने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता था। रामायण और महाभारत का उन्हें अच्छा ज्ञान था। सुशिक्षित पति और पुत्रों से बातचीत करने से कई विषयों में उनका ज्ञान भी बढ़ गया था। उनसे बातचीत करने पर ही लगता था कि वे सुशिक्षित हैं। उनकी ग्रहणशीलता और स्मरण शक्ति बहुत तीव्र थी। वे अल्पभाषिणी, शांत स्वभाव वाली बातचीत में अत्यन्त मधुर, तेजस्विनी तथा राजरानी की भाँति अत्यन्त गरिमामयी थीं। पड़ोसिनें सदा उनसे सहायता पाने की आशा रखतीं और उनके गृह–द्वार पर आए दुःखी, दरिद्र कभी खाली हाथ नहीं लौटते, ऐसी वे करुण हृदय थीं। अपनी सन्तान को सुशिक्षित करने की उनकी प्रबल प्रवृत्ति थी। उनकी गोद में बैठकर बालक नरेन्द्र ने कुरुवंश गौरव भीष्मपितामह आदि की बातें, देश के महापुरुषों एवं देवी–देवताओं की महिमा की जानकारी प्राप्त की थी। माँ से ही उनका प्रथम विद्यालय तथा विद्यारम्भ हुआ था। संसार की अनेक आपत्तियों से किस प्रकार अपने नैतिक मूल्यों को ऊँचा उठाए रखना एवं परमात्मा के श्रीचरणों को जीवन का सर्वोत्तम अवलम्बन मानकर किस प्रकार तन–मन–वचन से उनकी ही शरण में रहना ये सारी बातें उन्होंने माँ से ही सीखी थीं।

यहाँ एक घटना के उल्लेख से भुवनेश्वरी देवी के उच्च–विचार की अनुभूति होती है शिक्षक ने एक दिन यह सोचकर कि पाठ में त्रुटि की है, उन्हें अनुचित रूप से दण्ड दिया। यद्यपि नरेन्द्र प्रतिवाद स्वरूप बार–बार कहते रहे 'मैंने ठीक ही कहा है, तथापि उससे शिक्षक का क्रोध और भी बढ़ गया और उन्होंने नरेन्द्रनाथ को बेंत की छड़ी से निर्दयतापूर्वक पीटा। नरेन्द्र ने घर लौटकर अश्रुमय आँखों से माँ को घटना बताई। स्नेहमयी भुवनेश्वरी ने अपने पुत्र के कष्ट के प्रति आन्तरिक सहानुभूति प्रकट करते हुए विगलित कण्ठ से कहा 'पुत्र यदि तुमसे त्रुटि नहीं हुई है, तो इससे क्या आता–जाता है? परिणाम चाहे जो भी हो, जिसे तुम सत्य समझते हो उसे ही सदैव करते जाना सम्भवतः कई बार इसके लिए अनुचित तथा अप्रिय फल भोगना पड़े, पर सत्य का त्याग कभी नहीं करना।' यह कहना आवश्यक है कि शिक्षक ने बाद में अपनी भूल समझी और स्वीकार की थी।

माँ ने और भी जीवनोपयोगी शिक्षाएँ उनके हृदयपटल पर प्रतिपादित कीं, जैसे आजीवन पवित्र एवं शांत रहकर अपनी मर्यादा की रक्षा करना कभी दूसरों के सम्मान पर आघात नहीं करना तथा आवश्यक होने पर दृढ़ हृदय बनाए रखना।

नरेन्द्रनाथ अपनी माँ को प्राणों से बढ़कर प्यार करते तथा उनकी बातों को सदा याद रखते थे। वे कहा करते थे 'जो माँ की सच्ची पूजा नहीं कर सकता। वह कभी भी बड़ा आदमी नहीं हो सकता' और कई बार उन्होंने गर्व के साथ घोषणा की थी 'अपने ज्ञान के विकास के लिए मैं अपनी माँ का ऋणी हूँ।' स्वामी विवेकानन्द का हृदय इतना मातृभक्ति परायण था, कि उनकी जीवनगाथा को जानकर आश्चर्य होता है कि संसार–विरागी, सर्वत्यागी संन्यासी का हृदय भी क्या इतना कोमल हो सकता है?

पेज 14 का शेष

रिलिजनों ने दुनिया में कितना आतंक किया, कितनी ही सभ्यताओं को नष्ट किया जो आज भी बदस्तूर जारी है। इसलिए हम भारत के लोग अपने ज्ञान विज्ञान को जाने और समझे देश के रक्षा हेतु बने विचार दैशिक चिंतन 'भारत केन्द्रित ज्ञान' को आत्मसात करें अपने स्व को जागृत करें।

गुरु अमृत की खान

गरिमा मिश्रा

जो उदार है, उच्च है, सरल है और शिष्ट है; जो अनुपम है, निरुपम है, अतुल, अनमोल है; जो धीरज है, धर्म है, धारा और ध्यान है; जो उपकारी है, उपासना है, ऊर्जा है, उल्लास है, जो प्रकाश है, प्रकाशक है, प्रबुद्ध है, प्रवाह और प्रकर्ष है; जो प्रतिपाल है, प्रतिबोध है और प्रतिमान है ऐसे अनुपम, अद्वितीय और अप्रतिम गुणों का अधिष्ठान ही भारतीय जीवन संस्कृति में हो गुरु के परमपूज्य पद पर प्रतिष्ठित है। जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है, मोक्ष। जगत का कण–कण मायावी है। माया की सृष्टि है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, माया, मत्सर, राग, द्वेष, अभिनिवेश (मृत्यु का भय) आदि माया रचित कठोर चक्रव्यूह हैं इनको सफलतापूर्वक भेदते हुए, जीवन के परमलक्ष्य (मोक्ष) की प्राप्ति का उचित मार्ग बताने वाला अतिविशिष्टः के और विराट व्यक्तित्व ही, गुरू है। भारतीय जीवन दर्शन की परमादरणीय संज्ञा है, वह ।

प्राचीनकाल से लेकर आज तक भारत जो कुछ भी है, वह गुरु अर्थात शिक्षक की शिक्षा का ही परिणाम है। संकट केवल गुरु के प्रति अपरिमित श्रद्धा के अभाव का है। भारत में यह अभाव आदिकालीन नहल बल्कि समकालीन है। समकालिन भटकाव है। यह भटकाव भी वाह्य नहल आन्तरिक है। अपने अंदर का भटकाव है। अपने अंतश में लौटकर ही गुरुश्रेष्ठ की दैवीय आभा का ज्ञान, दर्शन और बोध सम्भव है। किन्तु माया की अंधी दौड़ गिरते-पड़ते भागते आदमी की घर वापसी कराने का यह कार्य भी तो गुरु का ही है। ध्यान रहे, सनातन मान्यता में डिग्रीधारी को व्यक्ति विशेष ही शिक्षक या गुरू नहल बल्कि जीवन में उत्थान और उत्कर्ष का ज्ञान देने वाला हर पथप्रदर्शक गुरू है, शिक्षक है। मां, पुत्र की प्रथम गुरु है। पिता विशिष्ट गुरु है। समाज शिक्षक है किन्तु सबके मूल में वही गुरू है।

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट और सभ्यता के प्रथम चरण से ही अनाकार, अनगढ़ और अबोध बाल–मन को गढ़कर सफल मानव व्यक्तित्व देने वाली साधना का नाम है, गुरू। गोविंद (ईश्वर) के भी अस्तित्व व कृतित्व ज्ञान से परिचित कराने के कारण वह गोविंद से भी श्रेष्ठ है –

गुरू गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताय।।

गुरू के प्रति कबीर के इस यथार्थ अहलाद को युगों का समर्थन प्राप्त है।

भारतीय संस्कृति में गुरू अपने शिष्य को अनेक विषयों व विधाओं में शिक्षित और दीक्षित करता है। बाद में वही शिष्य, गुरू पद पर पहुंचकर अपने शिष्यों को गढ़ता है। ज्ञान के आदान–प्रदान का यही अनवरत क्रम भारतीय जीवन–पद्धति में ओजस्वी गुरू–शिष्य परम्परा के रूप में प्रतिष्ठित है। मशीन आधारित पाश्चात जगत की औद्योगिक क्रांति से विश्व–संस्कृति प्रभावित होने लगी थी। साम्राज्यवादी प्रसार और प्रभाव में औपनिवेशिक (गुलाम) देशों के जीवन–मूल्य करवट बदलने लगे। ब्रिटिश हुकूमत में भारत में विकसित अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजीयत से गुरू–शिष्य परम्परा भी विद्रुपित होने लगी। आदिकाल से अपार श्रद्धा, आदर, अपनत्व और परोपकार जैसे गुणों से ओतप्रोत यह निबंध–धारा अंग्रेजीयत के प्रभाव में हिचकोले खाने लगी।

भारतीय धरा पर गुरू उपाधि है, शब्द नहीं। यहां गुरू का कोई पर्यायवाची नहीं था। लेकिन अंग्रेजी शिक्षा और शब्दकोष के पन्नों में वह टिचर, मास्टर, रीडर, प्रोफेसर, लेक्चरर आदि होता हुआ गुरू पर्यायवाची हो गया। एकल गुरू अनेक रूपों वाला हो गया। अब उसका एकनिष्ठ– एकरस एकरूप अनेक शक्ल और रस–रूप वाला हो गया। यह गुरू के असीम गुरुत्व (अथाह वजन) का विभाजन था। अतः उसकी मर्यादा 5 और निष्ठा भी

विभाजित हुई। उसके आचरण की मर्यादा और चरित्र की सम्पदा में भी रूपांतरण हुआ और उपयोगीतावाद (लाभ–हानि) के हवाले ने होकर गुरू–शिष्य परम्परा शिक्षक–छात्र–व्यवस्था में बदल गई। ज्ञान, गुरू–शिष्य परम्परा की धुरी थी। ज्ञानार्जन इस परम्परा का प्रमुखाधार था। शिक्षक छात्र व्यवस्था में ज्ञानार्जन, शिक्षित होने में बदल गया। आदमी को इंसान बनाना; ज्ञान का लक्ष्य है। जबकि आदमी को इंजीनियर, डाक्टर, कलेक्टर बनाना शिक्षा का लक्ष्य। तब नैतिक मूल्यों के उत्थान और नैतिक आचरण के बिना ज्ञान का कोई उद्देश्य नहीं था। ज्ञान का कोई मतलब नहीं था। अब जज, कलेक्टर, डाक्टर, इंजीनियर, तहसीलदार, हवलदार, लेखपाल, कानूनगो और पटवारी आदि बनने के अलावा शिक्षा का कोई मतलब नहीं है। शिक्षा का कोई उद्देश्य नहीं है। युग बदला तो गुरू–शिष्य परम्परा भी संग्रहालयों में रखी दुर्लभ वस्तु हो गई। गुरुकुल और आश्रमों के बाद पाठशालाओं के युग से होती हुई शिक्षा व्यवस्था उन कान्वेंट स्कूलों तक पहुंच गई जहां गुरू के स्थान पर सर या मैडम तथा शिष्य की जगह स्टूडेंट (छात्र) आबाद हो गए।

मध्यकाल तक जो गुरुश्रेष्ठ अपनी विधा में सम्पूर्ण जगत था, स्वयं की साधना से निर्मित स्वयंसंघ था वही, आधुनिकता के खांचे में अपनी संपूर्णता को खोकर शिक्षक संघों का एक अंक मात्र हो गया है। उसकी निज पहचान उसके अपने गुरुत्व (वजन) से ज्यादा शिक्षक संघों के पदाधिकारी या उसके सदस्य होने से है। उसकी अब बहुआयामी पहचान है। वह शिक्षक है, ग्रामप्रधान और गणक (जनगणना करने वाला) है। गणित, भौतिक विज्ञान और रसायन विज्ञान आदि विषयों के विशेषज्ञ नाम से वह खम्भों पर लटका इस्तहार (विज्ञापन) है। वह महंगे कोचिंग– संस्थानों का सर है। किन्तु उसकी निष्ठा कोचिंग में पढने वाले छात्रों के प्रति भी नहीं। जहां पैकेज (सालाना वेतन) ज्यादा तय हुआ, इन्हें छोड़ वहां चला गया। शिक्षक संघ उनका संघनित अस्तित्व है। शिक्षक संघों के रूप में वह छात्रों से अलग है। छात्रों से दूर है। क्योंकि अपने हित के लिए शिक्षकों की तरह छात्रों का भी अपना संघ है। पहले दोनों का हित एक– दूसरे के उत्थान में था। ज्ञानार्जन में था। मानव जगत के नवनिर्माण में था। अब दोनों का अपना अलग–अलग हित है। दोनों का अपना अलग–अलग खेमा है। अलग–अलग आचारण और व्यवहार है। शिक्षक दिवस इन्ही दो खेमों के मध्य की लम्बाई–चौड़ाई में, साल में एक दिन बैठकर मना ली जाने वाली औपचारिकता है। गुरू आभा की यह सुगति है, प्रगति है, उन्नति है या अवनति ? पता नहीं।.....

गरीब बच्चों के भी चंद शिक्षक

ईश्वरीय कृपा से गरीब बच्चों के भी चंद शिक्षक हैः मूल्यों संग जीने वाले दुर्लभ प्रजाति के गुरु। उनकी अलग पहचान है। वह एकांत में है। अकेले है, अज्ञात हैं। जिस गुरु का मान, सम्मान, हित और आनंद, शिष्य के उत्थान और उत्कर्ष में था और शिष्य का यही सब कुछ गुरुकृपा और गुरूचरणों में था वह स्थानांतरित होकर कहीं और हो गया है। सम्भवतः बाजारवाद में। हितों का यह विचलन ही दो युगों के मध्य की विभाजन रेखा है। गुरू–शिष्य परम्परा के लगभग निष्प्राण हो जाने या गुजर जाने का प्रमाण है।

इसी तरह शिष्य एक थे, एक पहचान थी उनकी। किन्तु शिक्षकों की भांति वह भी जाति, पंथ, धर्म और समुदाय में कई फांड़ हो गए।

दुर्भाग्यवश इस विभाजन को ही आधुनिकता या बौद्धिक आधुनिकता माना जाने लगा है। हृदय में सदैव अनुरंजित होने वाली – असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय – जैसी औपनिषदिक कामना टकराव और चुनौती देने वाले नारों अभी तो यह अंगड़ाई है, आगे और लड़ाई है, जो हमसे टकराएगा, चूर–चूर हो जाएगा....में बदल गई है।

संघों का गठन, समय की मांग हो सकती है किन्तु संघों से शिक्षकों और छात्रों का आदर, सम्मान और हित कितना सुरक्षित है? पता नहीं। लेकिन देश व प्रदेश की राजधानियों में अपनी मांगों को लेकर उनके प्रदर्शन पर, पुलिसिया –ल–कला से हाथ, नाक, घुटना और मुंह के विद्रुपित होने का दृश्य, कुछ बताता जरूर है।....

आधुनिकतावाद के झंझावात में भी श्रद्धा और समर्पण के भाव से परिपूर्ण गुरू–शिष्य को जीवन्त रखने के लिए भारत में वर्ष 1962 से ज्ञान–गगन के अनमोल

पेज 21 पर शेष भाग

भारत का पाक को संदेश

मित्र पड़ौसी सुनो विदेशी, भारत के संदेश को ।
जियो और जीवित रहने दो, दुनिया के हर देश को ।।
कौन मनुज जिसको न सुहाता, बाल वृन्द का मन भोलापन ।
रूनझुन पायल की मधुर झनक, अपनी बसुधा का अन्तः स्थल ।
सबके इतिहास धर्म प्रिय है, आदर दो सबके वेष को ।।
मित्र पड़ौसी सुनो विदेशी.....
तुम किसी काली को मत छेड़ो, सब फूलों को मुस्काने दो।
घोले नगला तुम निर्बल का, जो गाता उसको गाने दो।।
पहले तुम अपना घर देखो, मत पर घर आज बयाने दो।।
मित्र पड़ौसी सुनो विदेशी.....
यदि रज ज्वाला फिर धधक उठी, तो कुछ न बचेगा फिर बाकी ।
ना जाने कितने हो जाये, हीरोशिमा नागासाकी ।
भगवन जाने क्या गति होगी, मानव की और मनुजता की।।
मित्र पड़ौसी सुनो विदेशी.....
नहीं जगाना अच्छा है, जीवन में दारूण क्लेश को ।
मित्र पड़ौसी सुनो विदेशी, भारत के मित्र पड़ौसी संदेश को ।
जियो और जीवित रहने दो, दुनिया के हर देश को ।।
मित्र पड़ौसी सुनो विदेशी.....

हँसते-हँसते जीना

1. **प्रीतो (सन्ता से)**-बाइक तेज मत चलाओ। मुझे डर लग रहा है।
   सन्ता- अगर ज्यादा डर लग रहा है, तो मेरी तरह आखें बन्द कर लो।
2. **अध्यापक ने छात्र से पूछा**-बताओ बच्चों दिन में तारे किस समय दिखायी देते हैं ?
   एक छात्र ने उत्तर दिया जब तमाचे पड़ते हैं।
3. **मरीज**-डाक्टर साहब मरने के बाद मैं अपना दिमाग दान करना चाहता हूँ।
   डॉक्टर-ठीक है, अगर होगा, तो ले लेंगे।
4. **महिला**-अरे बेटे पप्पू, क्या हुआ ? **पप्पू**-आण्टी, मम्मी ने एक कटोरी चीनी मँगाई है।
   महिला- मुस्करा कर पप्पू का सिर सहलाते हुए कहती है, और क्या कहा है मम्मी ने ?
   पप्पू-कहा है कि अगर वो डायन न दे, तो सामने वाली चुड़ैल से ले आना।
5. शादियों में तीन तरह के नाचने वाले लोग होते हैं। एक तो वो जो भांगड़ा स्पेशल होते हैं, एक वो जो, नागिन स्पेशल होते हैं। और तीसरा वो जिनको देख पता नहीं चल पाता कि नाच रहें या मिर्गी आयी है।

भामाशाह बना दानी

अकबर की विशाल सेना एवं संसाधनों का सामना महाराणा प्रताप अपने थोड़े से सैनिकों और अल्प साधनों के माध्यम से करते जा रहे थे। धीरे–धीरे उनकी सम्पत्ति व सेना समाप्त हो गयी। निराश होकर महाराणा सपरिवार सिन्ध प्रदेश की ओर चल दिये। जब भामाशाह को यह बात पता चली, तो भामाशाह उनसे मिलने पहुँचे और विनम्र स्वर में निवेदन करते हुए बोले– "महाराज यदि आप ही निराश होकर हमें छोड़कर चल देंगे, तो फिर हम किसके सहारे जीवित रहेंगे। आप फिर से मेवाड़ चलिये और फिर से सेना तैयार कीजिये। मैंने आजीवन जो धन कमाया है, उसे सैन्य संगठन हेतु स्वीकार कीजिये।

महाराणा प्रताप वापस मेवाड़ लौट आये और भामाशाह की दी हुई सम्पत्ति से सेना खड़ी कर पुनः युद्ध किया और विजयी हुए। भामाशाह सदैव अपनी पूँजी को मातृभूमि की सेवा में अर्पित करने की प्रेरणा देते रहेंगे।

धरती का गहना

कहना है सारी दुनिया का,
वृक्ष है गहना इस धरती का।
बिना वृक्ष के धरती कैसी,
बिना वस्त्र के मानव जैसी।
मानव में जीवन होता है,
यह जीवन पौधा देता है।
फसलें होती हैं वर्षा से,
वर्षा तो होती पौधों से।
हरे–भरे ये सारे जंगल,
करते हैं दुनिया में मंगल।
वृक्ष लगाओ जीवन पाओ,
इसी तरह के गीत भी गाओ।

पेज 19 का शेष

प्रकाश–पुंज डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिन (5 सितम्बर) को प्रति वर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मानने का श्रीगणेश हुआ। 80 के दशक तक स्कूलों और विद्यालयों में पूरे उत्साह से मनाया जाने वाला शिक्षक दिवस कान्वेंट स्कूलों के कल्चर से परिचित हुआ। फिर सोशल मीडिया के मंच पर पहुंचकर एक दिन के लिए शिक्षित–समाज द्वारा निर्वाह की जाने वाली औपचारिकता सभ्यता बन चुका है।

निर्भीक शिवा

शिवाजी के साहस का एक और किस्सा प्रसिद्ध है। तब पुणे के करीब नचनी गाँव में एक भयानक चीते का आतंक छाया हुआ था। वह अचानक ही कहीं से हमला करता था और जंगल में ओझल हो जाता। डरे हुए गाँव वाले अपनी समस्या लेकर शिवाजी के पास पहुँचे।

"हमें उस भयानक चीते से बचाइए। वह ना जाने कितने बच्चों को मार चुका है, ज्यादातर वह तब हमला करता है जब हम सब सो रहे होते हैं''।

शिवाजी ने धैर्यपूर्वक ग्रामीणों को सुना, "आप लोग चिंता मत करिए, मैं यहाँ आपकी मदद करने के लिए ही हूँ"।

शिवाजी अपने सिपाहियों यसजी और कुछ सैनिकों के साथ जंगल में चीते को मारने के लिए निकल पड़े। बहुत ढूँढने के बाद जैसे ही वह सामने आया, सैनिक डर कर पीछे हट गए, पर शिवाजी और यसजी बिना डरे उसपर टूट पड़े और पलक झपकते ही उसे मार गिराया। गाँव वाले खुश हो गए और "जय शिवाजी" के नारे लगाने लगे।

आचार्य विकास की संकल्पना

शिक्षण-प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि है

उमाशंकर मिश्र
क्षेत्रीय बालिका शिक्षा प्रभारी

आचार्य–शिक्षण पद्धति पाठ्यक्रम, भवन आदि साधन सामग्री की व्यवस्था कितनी भी अच्छी क्यों न हो, किन्तु शिक्षक (आचार्य) पद आसीम चरित्रवान एवं योग्य नहीं है, तो सम्पूर्ण व्यवस्थाएं निरर्थक हो जाती है।

आचार्य विकास की संकल्पना–

1. ज्ञानात्मक विकास
2. भावात्मक विकास
3. चारित्रिक विकास
4. आध्यात्मिक विकास

◆ लक्ष्य का स्पष्ट ज्ञान ◆ सुलेख ◆ स्वाध्यायी हमारी संकल्पना के आधार पर कार्य कर सकें।

1. ***शैक्षिक विकास***–(i) विषय ज्ञान :–स्वाध्याय साहिस उपलब्ध करवाना। (ii) विषयशः प्रशिक्षण वर्ग, विधियाँ, उद्देश्य, विषय ज्ञान कराया जाये।

2. ***कार्य करना*** –(i) कार्यशाला में आचार्यो की सहभागिता सर्वाधिक हो। (ii) विषय विशेषज्ञ उपस्थित रहें। (iii) किसी एक को संयोजक बनाना।

3. ***नवीन शैक्षिक*** –तकनीक का ज्ञान कराना।

4. ***स्वाध्याय की वृत्ति जाग्रत की जाये–*** पाठ्यक्रम आवश्यक साहित्य पूर्व ज्ञान के लिए वैदानिक परीक्षा का आयोजन, पुरस्कार, भावनात्मक विकस करना।

5. ***सुलेख ठीक करवाना***–विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन।

6. ***अभि रूचि विकास***–रूचिजाग्रत करना भाषण, सुलेख, निबन्ध लेखन, गीत, आदर्श पाठ सहायक सामग्री निर्माण। प्रशिक्षण वर्गो का आयोजन, विद्यालयी क्रियाकलापों से जुड़ना, आदतें बनना, बैठकों का आयोजन, व्यक्तिगत सम्पर्क करना।

2. ***संस्कारात्मक विकास–***

◆ स्वाध्याय।

◆ श्रेष्ठजनों की प्रेरणा।

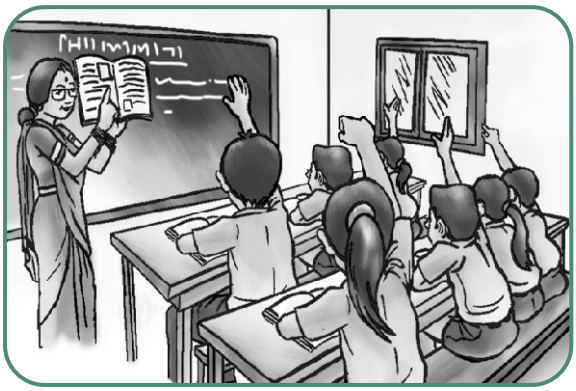

◆ सन्त महात्माओं का प्रवचन।

◆ वन्दना का प्रभावी स्वरूप।

◆ महापुरुषों की जयन्तियाँ–श्रेष्ठ गुणों का वाचन।

◆ स्वच्छता, वेश का निर्धारण।

◆ शिशु भारती का प्रभावी स्वरूप।

◆ नियमित शाखा व्यवस्था।

◆ देश दर्शन यात्रायें।

◆ धार्मिक कार्यक्रम।

◆ अधिकारियों का प्रवास।

◆ समय पालन का भाव।

◆ बोध कथा एवं सम्भाषण।

◆ सामाजिक कार्यो में सहभागिता।

3. ***सामाजिकता का विकास–***

◆ अभिभावक सम्पर्क पर बल।

◆ सामाजिक एवं धार्मिक उत्सवों में विभिन्न व्यक्तियों का आना।

◆ सेवा कार्यो का योगदान।

◆ संस्कार केन्द्र चलाना। साक्षरता अभियान गाँव में।

◆ कार्यक्रमों में अधिकारियों को बुलाना।

◆ आकस्मिक कार्यो में योगदान।

- नागरिक सुरक्षा समितियों का निर्माण।
- शैक्षिक यात्रायें – वन विहार
- पर्यावरण प्रदूषण।
- सांस्कृतिक प्रदूषण–टी.वी., पत्र पत्रिकायें में लेखा।
- श्रमदान करवाना।

4. ***प्रेरणा विकास :***

- नियमित सम्पर्क करना।
- जयन्तियाँ, उत्सव, वर्ग, बोध कथा तथा महापुरुषों से प्रेरणा लेना।
- व्याख्यान मालायें आयोजित करना।
- अधिकारियों से प्रेरण लेना।
- निबन्ध, मानव चौपाई, भाषण प्रति आयोजित करना।
- आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करना।
- श्रेष्ठ के प्रति गौरव का भाव।
- नैपुण्य वर्गो का आयोजन।
- आचरण द्वारा शिक्षा का विकास।
- व्यक्तिगत सम्पर्क।

सहिष्णु और दयालुता

एक बार छत्रपति शिवाजी महाराज जंगल में शिकार करने जा रहे थे। अभी वे कुछ दूर ही आगे बढे थे कि एक पत्थर आकर उनके सर पे लगा। शिवाजी क्रोधित हो उठे और इधर–उधर देखने लगे, पर उन्हें कोई भी दिखाई नहीं दे रहा था, तभी पेड़ों के पीछे से एक बुढ़िया सामने आई और बोली, "ये पत्थर मैंने फेंका था !

"आपने ऐसा क्यों किया शिवाजी ने पूछा।

"क्षमा कीजियेगा महाराज, मैं तो आम के इस पेड़ से कुछ आम तोड़ना चाहती थी, पर बूढी होने के कारण मैं इस पर चढ़ नहीं सकती इसलिए पत्थर मारकर फल तोड़ रही थी, पर गलती से वो पत्थर आपको जा लगा", बुढ़िया बोली।

निश्चित ही कोई साधारण व्यक्ति ऐसी गलती से क्रोधित हो उठता और गलती करने वाले को सजा देता, पर शिवाजी तो महानता के प्रतीक थे, भला वे ऐसा कैसे करते ?

उन्होंने सोचा, यदि यह साधारण सा एक पेड़ इतना सहनशील और दयालु हो सकता है जो की मारने वाले को भी मीठे फल देता हो तो भला मैं एक राजा हो कर सहनशील और दयालु क्यों नहीं हो सकता? और ऐसा सोचते हुए उन्होंने बुढ़िया को कुछ स्वर्ण मुद्राएं भेंट कर दीं ।

मित्रों सहनशीलता और दया कमजोरी नहीं बल्कि वीरों के गुण हैं। आज जबकि छोटी–छोटी बातों पर लोगों का क्रोधित हो जाना और मार–पीट पर उतर आना आम होता जा रहा है ऐसे में शिवाजी के जीवन का यह प्रसंग हमें सहिष्णु और दयालु बनने की सीख देता है।

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा भी है :

तृणादपि सुनीचेन तरोरिव सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयो सदा हरिः।।

हमें भगवान का पवित्र नाम विनम्रता के साथ लेना चाहिए, ये सोचते हुए कि हम रास्ते में पड़े तिनके से भी निम्न हैं। हमें पेड़ से भी अधिक सहनशील होना चाहिए झूठी प्रतिष्ठा की भावना से मुक्त और दूसरों को सम्मान देने के लिए तत्पर होना चाहिए। ऐसी मनोस्थिति में हमें भगवान के नाम का निरंतर जप करना चाहिए।

गोभक्ति - हमारा संस्कार

एक समय एक राज्य के नगर में एक ऐसी घटना हुई जिसने सभी को किंकर्तव्य विमूढ़ बना दिया। नगर के समीप एक खेत में तारों की बागड़ लगी थी, जिसमें एक गाय का सींग उलझ गया। गाय अपने सींग को निकालने का बराबर प्रयत्न कर रही थी, मगर वो जितना प्रयत्न करती, सींग उतना ही और उलझ जाता। गाय विवशता, पीडा और क्रोध से ग्रसित हो गई और पछाड़े खाने लगी। वहां एकत्रित भीड़ में किसी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें, तभी एक व्यक्ति बोला कि गाय का सींग काट दो। यह सुनकर सभी सकते में आ गए। कुछ समय पश्चात् गाय का सींग तो निकल गया और गाय चली गई, मगर सींग काटने वाली बात ने तूल पकड़ लिया। जिसने ये बात कही थी, सभी उस पर टूट पड़े कि आखिर मां समान पूजनीय गौ का सींग काटने जैसा तामसी विचार उसके मन में आखिर आया कैसे? लोगों ने दण्ड के लिए उसे राज्य के राजा के समक्ष प्रस्तुत किया। राजा ने दण्ड देने से पहले उसकी माँ को बुलवाया और कहा कि तुम्हारा पुत्र गौ–माता का सींग काट देने की बात इतनी आसानी से कैसे कह सकता है? क्या तुम कसाई परिवार से हो या तुम्हारा परिवार भ्रष्ट बुद्धि का है ? उसकी माता ने राजा से क्षमायाचना करते हुए कहा कि है, राजन हम उच्च ब्राह्मण परिवार से हैं और हमारे परिवार में भी सदैव से गाय की पूजा होती रही है। लेकिन फिर भी मेरे पुत्र ने ऐसी लज्जाजनक बात कही है, तो इसमें उसका नहीं उसके परिवेश का संस्कारों का दोष है। राजा द्वारा पूछने पर उसने स्पष्ट किया कि राजन इसके जन्म से पहले ही इसके पिता का देहान्त हो गया था।

हमारे पड़ोस में एक कसाई का परिवार रहता है और मेरा बेटा बचपन से उनके घर में आता जाता रहता था। मेरे लाख मना करने के बाद भी इसकी मित्रता कसाई के पुत्र से हो गई थी और ये रात–दिन उसी के साथ रहने लगा। यही कारण है कि इसे गोमाता का सींग काटकर अलग कर देने जैसी नीच बात करने में भी लज्जा नहीं आई। राजा ने कसाई को बुलवाकर उसे नगर की सीमा से बाहर रहने का आदेश दिया। साथ ही आरोपी लडके को तीन गाए प्रदान कर जीवन पर्यन्त उनकी सेवा करने का निर्देश दिया। दरबार में संस्कारों की चर्चा कई दिनों तक होती रही। राजा ने कहा कि कुसंगति और कुसंस्कार जिस प्रकार व्यक्ति का पतन कर देते हैं, उसी प्रकार अच्छी संगति और गौ–सेवा व्यक्ति का उत्थान कर उसे देवतुल्य बना सकते हैं।

इन्सान

किसी के काम जा आए, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया दर्द अपनाये, उसे इन्सान कहते हैं ।।
कभी धनवान है कितना, कभी इंसान निर्धन है।
कभी सुख है कभी दुख है, इसी का नाम जीवन है।
मुसीबत में न घबराते, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया.....
ये दुनियाँ एक उलझन है, कहीं धोखा कहल ठोकर।
कोई हँस-हँस के जीता है, कोई जीता है रो-रोकर।।
जो गिरकर के भी सम्हल जाए, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया.....
मगर गलती रूलाती है, तो राहें भी दिखाती है।
मनुज गलती का पुतला है, जो अक्सर हो ही जाती है।।
जो करले ठीक गलती को, उसे इन्सान कहते हैं।
पराया.....
यो भरने को तो दुनियाँ में, पशु भी पेट भरते हैं।
लिए इन्सान का दिल जो, वो नर परमार्थ करते हैं।।
पथिक जो बाँटकर खाये, उसे इन्सान कहते हैं
पराया.....

धरती हमसे पूछ रही है

धरती हमसे पूछ रही है. बताओ तो..... ??
क्यों उजाड़ रहे हो तुम... ये हरा भरा चमन.....,
इसी से तुम्हारी साँसों का.. होता आवागमन..!
बढ़ाते जा रहे हो क्यों तुम.. कंक्रीट भरे जंगल,
इससे तुम्हारा कभी भी....होगा नहीं मंगल...!
जुड़ी हुई है तुमसे हमारी.... ये जीवन की डोर,
एक के भी नहीं होने से....बचेगा न कोई और.!
छीन रहे हो निर्दयता से. जबसे मेरी हरियाली,
एक एक बीमारी तुमने.. मुफ्त में ही है पाली..!
इस अटूट रिश्ते का तुम.. अब भी रख लो मान,
जीवित रहेगी सृष्टि और जिन्दा रहेगा ये जहान।

बालकोना

फिल्टर पेपर की खुराफात
(Naughty Strainer)

आवश्यक सामग्री - एक लीटर की बिना ढक्कन की खाली बोतल, छन्ना (फिल्टर) कागज, एक बाल्टी।

ऐसा करो -

1. बोतल पानी से पूर्णतः भर दो।
2. खाली बाल्टी में छन्ना कागज से छानते हुए बोतल से पानी डालो।
3. अचानक ही एक बार छन्ना पत्रक बोतल के मुँह पर लगा बंद कर दो।

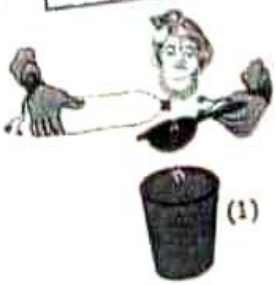

आप देखते हैं कि -

1. प्रथम स्थिति में पानी छन्ना कागज से होकर नीचे बाल्टी में गिरता है।
2. दूसरी स्थिति में पानी का प्रवाह नहीं होता है।

वैज्ञानिक कारण-

1. पानी छन्ना–पत्रक के छिद्रों से छनकर नीचे की ओर प्रवाहित होता है।
2. दूसरी स्थिति में छन्ना–पत्रक के छिद्र पानी से बंद हो जाते हैं। हवा छिद्रों से बोतल में प्रवेश नहीं कर पाती है, अतः पानी छन्ना–पत्रक के माध्यम से प्रवाहित नहीं हो सकता है।
3. यदि हम बोतल को हल्का सा टेढ़ा झुका देते हैं तो पानी के बुलबुलों को बोतल में प्रवेश करता हुआ देख सकते हैं और उतनी ही मात्रा में पानी छन्ना पत्र से नीचे की ओर प्रवाहित होता है।

सिद्धान्त -

1. एक समय पर दो पदार्थ समान जगह नहीं घेर सकते हैं।
2. पृष्ठ तनाव का प्रभाव होता है।

गतिविधियाँ

विश्व पर्यावरण दिवस सम्पन्न

सरस्वती बालिका विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, बाहर दतिया गेट झांसी में आज दिनांक 5 जून 2023 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर छात्र–छात्राओं को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने हेतु लाइफ प्रतिज्ञा/शपथ ग्रहण कार्यक्रम भाजपा के वरिष्ठ नेता मनमोहन गेड़ा, समाज सेवी संस्था प्रयास सभी के लिए के संरक्षक रामकुमार लोहिया, विद्यालय की प्रधानाचार्या सुश्री कल्पना सिंह जी,आचार्य बंधु,आचार्या बहनों एवं उपस्थित भैया–बहनों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विद्यालय में पर्यावरण के प्रति विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी किया गया जिसमें पेंटिंग, पोस्टर प्रतियोगिता, मॉडल प्रदर्शन, पौधारोपण आदि का आयोजन संपन्न हुआ।

नवीन प्रधानाचार्य प्रशिक्षण वर्ग

विद्याभारती पूर्वी उत्तर प्रदेश द्वारा भारतीय शिक्षा परिषद के तत्वाधान में क्षेत्रीय नवीन प्रधानाचार्य प्रशिक्षण वर्ग दिनांक 21 मई 2023 से 31 मई 2023 तक सरस्वती कुंज, निरालानगर, लखनऊ में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण वर्ग में कुल अपेक्षित संख्या 70 थी जिसमें से 57 बन्धु भगिनी उपस्थित हुए। वर्ग में विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के 02 अधिकारी क्रमशः मा० यतीन्द्र जी अखिल भारतीय सहसंगठन मंत्री व मा० शिवकुमार अखिल भारतीय मंत्री तथा विद्याभारती पूर्वी उ0 प्र0 के क्षेत्रीय संगठन मंत्री मा० हेमचन्द जी तथा मा० जय प्रताप सिंह मंत्री विद्याभारती पूर्वी उ० प्र०, डॉ० राममनोहर जी प्रान्त संगठन मंत्री काशी प्रदेश, रजनीश पाठक जी प्रान्त संगठन मंत्री जन शिक्षा समिति कानपुर प्रान्त तथा विद्याभारती पूर्वी उ0 प्र0 के 08 समितियों के प्रदेश निरीक्षक, 06 सम्भाग निरीक्षक तथा 10 प्रशिक्षकों का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वर्ग के उद्घाटन सत्र में मा० शिवकुमार जी (राष्ट्रीय मंत्री) का प्रेरक मार्गदर्शन प्राप्त हुआ एवं समापन सत्र में मा० हेमचन्द्र जी (क्षेत्रीय संगठन मंत्री), डॉ0 जय प्रताप सिंह (क्षेत्रीय मंत्री), श्रीमती हीरा सिंह व श्रीमती मीरा श्रीवास्तव एवं क्षेत्रीय नवीन प्रधानाचार्य प्रशिक्षण वर्ग में भारतीय शिक्षा परिषद के सचिव श्री दिनेश कुमार सिंह तथा वर्ग के संयोजक श्री कमलेश कुमार सिंह, उमाशंकर मिश्र, मिथलेश अवस्थी, सुरेश सिंह, अवरीष जी एवं रणवीर सिंह की भी सहभागिता रही।

नव चयनित आचार्य प्रशिक्षण

भारती शिक्षा समिति उ०प्र० अवध प्रान्त द्वारा स०वि०म० मालवीय नगर गोण्डा में प्रान्तीय नव चयनित आचार्य प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन दिनांक 01 जूंन से 10 जून 2023 तक किया गया है जिसमें कुल 123 प्रशिक्षार्थी आचार्य 62 एवं 61 आचार्या बहिनों ने प्रतिभाग किया। जिसमें व्यवस्था की दृष्टि से 20 बन्धु उपस्थित रहे। मा० यतीन्द्र जी सह संगठन मंत्री विद्या भारती ने उद्घाटन सत्र में विद्या भारती का परिचय ओर हमारा लक्ष्य विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि अखिल भारतीय शिक्षण संस्थान विद्या भारती भैया/बहनों में पंचपदी शिक्षण पद्धति के माध्यम से नर से नरोत्तम की संकल्पना को चरितार्थ करते हुए भारत को विश्ववन्दनीय बनाना चाहती है। इस दिनांक तक चलने वाला यह प्रशिक्षण वर्ग प्रतिदिन सात सत्रों में प्रतिदिन पूर्णता को प्राप्त होता था। उमाशंकर मिश्र जी क्षेत्रीय बालिका शिक्षा संयोजक ने कक्षा प्रबन्धन एवं कक्षा का सांस्कृतिक परिवेश विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने द्वितीय सत्र में 'विद्यालय विकास में आचार्य की भूमिका

का विस्तार से वर्णन किया। सीतापुर सम्भाग के सम्भाग निरीक्षक श्री सुरेश सिंह जी ने शिक्षण को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से पाठय सहायक सामग्री का निर्माण एवं कक्षा शिक्षण में उसका प्रयोग कैसे हो ? इस विषय पर काफी रोचक ढंग से भावात्मक सम्प्रेषण उन्होंने ICT के कक्षा शिक्षण में प्रयोग जैसे मोबाइल LCD प्रोजेक्टर का उपयोग कर पाठ को रोचक बनाने का आग्रह किया। प्रदेश निरीक्षक श्री राम जी सिंह जी ने 21वीं सदी का आचार्य विषय पर अपना व्याख्यान देते हुए सम्भावित तैयारी की दृष्टि से अनेक बिन्दुओं पर ध्यानाकृष्ट किया। उन्होंने डिजिटल लिटरेसी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता विषय पर जोर देते हुए कहा अब आचार्य में तार्किक शक्ति सम्पन्नता के लिए ये परिवर्तन अनिवार्य है। उन्होंने कहा हमारे समग्र चिन्तन का केन्द्र बिन्दु बालक है अपनी योजना में सामान्य लोग भी असामान्य परिणाम देते हैं। श्री अवरीश जी सम्भाग निरीक्षक साकेत सम्भाग ने लेखन कार्य, गृह कार्य निरीक्षण एवं संशोधन पर अपने विचार व्यक्त किए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एक परिचय एवं कक्षा कक्ष में N.E.P. 2020 का क्रियान्वयन कैसे हो ? इस विषय पर दो सत्रों में मा० शिव कुमार जी (अ0भा0मंत्री विद्या भारती) ने विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में वर्णित 21वीं सदी के कौशलों का भारतीय चिन्तन के आधार पर विकास करना है।

वैचारिक सत्र में पंचकोशात्मक विकास के लिए भारतीय जीवन दर्शन के आधार पर बालक को नर से नरोत्तम व नारी से नारायणी बनाने के लिए अपने विचार रखें। विचार द्वितीय सत्र में पंचकोशात्मक विकास के कारक तत्व एवं सम्बन्धित गतिविधियों, 05 आधारभूत विषयों की क्रियात्मकता पर बोलते हुए 10 मिनट का अनिवार्य शारीरिक कार्यक्रम करने के लिए आग्रह किया। विद्याभारती 10 मिनट का अनिवार्य शारीरिक कार्यक्रम सभी विद्यालयों में भैया/बहिनों एवं आचार्य परिवार द्वारा अवश्य किया जावे। अन्य सत्रों में प्रान्तीय परीक्षा प्रमुख का श्री अवधेश कुमार सिंह जी द्वारा प्रश्न पत्र निर्माण की तकनीकियों एवं अन्य अपेक्षित बिन्दुओं पर विस्तार से व्याख्या की गई। डा० महेन्द्र कुमार मंत्री भा० शि० समिति उ० प्र० ने पाठ्य सहगामी क्रिया–कलाप विषय पर नव चयनित आचायों के मध्य विस्तार से प्रतिपादित किया। इसके अतिरिक्त क्षेत्र प्रशिक्षण प्रमुख–श्री दिनेश कुमार सिंह, शिशु वाटिका प्रमुख श्रीमती आशा शुक्ला, सह क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रमुख श्री कमलेश कुमार सिंह, क्षेत्रीय मंत्री डा० जय प्रताप सिंह, प्रचार प्रमुख श्री मनोजकान्त जी ने ''हमारी प्रेरणा का केन्द्र राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ'' पर विषय विचार रखें। सभी प्रशिक्षार्थियों द्वारा 05 हस्तलिखित पत्रिकाओं को निर्माण किया गया। जिसमें अनेक विषयों को समावेशित किया। गया। आचार्यों में अभिव्यक्ति सम्प्रेषण एवं संवर्धन के लिए, भजन सन्ध्या, काव्यपाठ, प्रेरक प्रसंग, गीत, गायन–वादन आदि का आयोजन रात्रि कार्यक्रम में किया गया। वर्ग की समस्त शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन श्री सुरेश सिंह जी सम्भाग निरीक्षक सीतापुर एवं समस्त व्यवस्थाओं की चिन्दा साकेत सम्भाग के सम्भाग निरीक्षक श्री अवरीश जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

प्रान्त के आन्तरिक अंकेक्षक श्री विशाल सिंह जी सर्व व्यवस्था प्रमुख श्री उमाशंकर तिवारी और बौद्धिक प्रमुख श्री मुनेन्द्र दत्त शुक्ला, श्री अवनि कुमार शुक्ला जी, श्री सुनील सिंह प्रान्त संयोजन संस्कृति बोध परियोजना वर्ग में मुख्य शिक्षक के दायित्व का निवर्हन कर रहे है। श्री वीरेन्द्र वर्मा जी, श्री स्वामीनाथ जी, श्री उत्तम कुमार मिश्र जी की संस्कृति बोध परियोजना पूर्ण कालिक अवध प्रान्त एवं डा0 बृजेन्द्र कुमार मिश्र, प्रधानाचार्य स०वि०मं० इण्टर कालेज, मालवीय नगर, गोण्डा पूरा समय रहे। अन्य व्यवस्था साकेत सम्भाग प्रमुख श्री अवरीश जी के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

मोहनलाल सरस्वती शिशु मन्दिर में मनाया जा रहा पर्यावरण सप्ताह

नगर के पक्का घाट स्थित मोहनलाल सरस्वती शिशु मंदिर में 5 जून से ही पर्यावरण संरक्षण सप्ताह का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिदिन शिक्षक एवं छात्रों द्वारा स्थान निर्धारित कर वृक्षारोपण का कार्य कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया जा रहा है वही विद्यालय के प्रधानाचार्य राजेश लाल श्रीवास्तव ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण हेतु पूरे विश्व में 5 जून को मनाया जाता है। इसी के अंतर्गत विद्यालय परिवार द्वारा बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता अभियान के पर्यावरण संरक्षण सप्ताह का आयोजन किया गया है जिसके प्रति विद्यालय के छात्रों का उत्साह देखते ही बन रहा है। इस असवर पर जितेंद्र सिंह, जयप्रकाश पाण्डेय प्रधानचार्य राजेश लाल श्रीवास्तव के साथ सैकड़ों की संख्या में छात्र छात्राओं ने सहभाग किया।

रानी रेवती देवी में पांच दिवसीय सेवा शिक्षा प्रशिक्षण वर्ग प्रारम्भ

'प्रयागराज स' विद्या भारती से संबद्ध काशी प्रांत के रानी रेवती देवी सरस्वती विद्या निकेतन इंटर कॉलेज राजापुर प्रयागराज में विद्यालय के प्रधानाचार्य बांके बिहारी पांडे के संयोजन में पांच दिवसीय सेवा शिक्षा प्रशिक्षण वर्ग का शुभारंभ हुआ जिसमें कुल 64 प्रतिभागी प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे स

उद्घाटन सत्र में भारतीय शिक्षा समिति उत्तर प्रदेश पूर्व काशी प्रांत के संगठन मंत्री डॉक्टर राम मनोहर ने प्रशिक्षार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि विद्या भारती के लक्ष्य के अनुसार कार्य करते हुए हमें संस्कार केंद्र की आवश्यकता क्यों पड़ी ? इस विषय पर विस्तार से चर्चा की उन्होंने कहा कि हम संस्कार केंद्र उपेक्षित बस्तियों में चला रहे हैं और वह उपेक्षित क्यों बने ? वह हमारे द्वारा उपेक्षित किए गए, हम उनको अपनी संस्कृति से जोड़कर मूल विचारधारा में लाने का प्रयास कर रहे हैं हम उन बस्तियों में स्वच्छता का कार्य भी करते हैं वहां का वातावरण भी ठीक हो हम इसलिए संस्कार केंद्र चलाते हैं हमको प्रत्येक संस्कार केंद्रों से प्रतिवर्ष 5 छात्रों को आगे बढ़ाना है।

क्षेत्रीय सेवा प्रमुख योगेश जी ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि चार पांच लोगों ने मिलकर 1952 में पक्की बाग गोरखपुर में पहला शिशु मंदिर खड़ा किया जो आज हजारों की संख्या में पहुंच गया हैं , छोटा सा बीज आज वटवृक्ष बन गया है उन्हीं विद्यालयों के माध्यम से हम जिन बस्तियों में सेवा केंद्र चलाते हैं वहां का वातावरण सुधारने का काम हमारा है हम अपने लक्ष्य को लेकर चल रहे हैं हमारा लक्ष्य निर्धारित हैं, झुग्गी झोपड़ी, गिरीवासी, बनवासी लोगों को भी अपने साथ जोड़ कर हम अपने लक्ष्य को पूरे करने में जुटे हुए हैं।

इस अवसर पर प्रांतीय सेवा प्रमुख कमलाकर तिवारी, प्रांतीय सह सेवा प्रमुख नरसिंह जी, गोरक्ष अवध नेपाल बॉर्डर सेवा संयोजक राघव जी सहित अवधेश कुमार गुप्ता, प्रेम सागर मिश्रा, कपिल देव सिंह, प्रवीण कुमार तिवारी, सुनील कुमार गुप्ता एवं अनूप कुमार गुप्ता की उपस्थिति प्रमुख रही। कार्यक्रम का संचालन दिनेश कुमार शुक्ला ने किया।

रामबाग के पूर्व छात्र नीलांशु गौरव का जेआरएफ में चयन।

सरस्वती विद्या मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबाग बस्ती के पूर्व छात्र भैया नीलांशु गौरव पुत्र श्री ओम नारायण, निवासी ग्राम मरवाटिया बाबू, बस्ती का डीआरडीओ जेआरएफ में चयन हुआ है। उनके इस उपलब्धि पर विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री गोविन्द सिंह ने भैया नीलांशु और उनके पिताजी को अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया और मिठाई खिलाकर उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनायें दी।

इस अवसर पर विद्यालय के उप प्रधानाचार्य विजय प्रताप पाठक एवं पूर्व छात्र परिषद प्रमुख श्री राजीव कुमार श्रीवास्तव समेत समस्त आचार्य बन्धुओं ने भी शुभकामनाएं दी।

''नियमित योग से होगी निरोगी काया''

श्री कृष्ण चन्द्र गांधी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर विद्यालय में आयोजित विश्व योग दिवस में उद्‌गार व्यक्त करते हुए प्रदीप श्रीवास्तव, महामंत्री, नव वर्ष मेला समिति मथुरा ने बताया नियमित रूप से योग, प्राणयाम, सूर्य नमस्कार करने से ही इस शरीर को स्वस्थ एवं गतिशील बनाए रखना प्रत्येक मानव का धर्म एवं कर्तव्य है। श्री राम प्रकाश अग्रवाल पूर्व अध्यक्ष विद्यालय ने भी बढ़ती उम्र में कोई बीमारी न लगे अथवा यदि लगी है तो कैसे नियंत्रण रखें इसके लिए प्रतिदिन आधा घण्टा योग, प्राणायाम, आसन के लिए जरूर निकालें। अपनी दिनचर्या में इसका समायोजन अवश्य करें।

योग दिवस के अवसर पर हरीशंकर उपाध्याय प्रान्तीय संगठन मंत्री विद्या भारती ब्रज प्रदेश, विद्यालय प्रबन्धक कीर्ति मोहन सर्राफ, मनोज सिंह चौधरी राजकीय महाविद्यालय एटा के असिस्टेण्ट प्रोफेसर, राजीव पाठक, स्टाफ सहित प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

धन्यवाद ज्ञापन प्रधानाचार्य हुकमचन्द चौधरी द्वारा दिया गया।

योग दिवस पूर्ण

दिन बुधवार को हमारे विद्यालय सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इण्टर कालेज, रायबरेली में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, विद्यालय के योग शिक्षक श्री विवेक श्रीवास्तव जी के कुशल नेतृत्व में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में विद्यालय परिवार के सभी सदस्यों ने समस्त आसन जैसे–ताडासन, वृक्षासन, त्रिकोणासन, वीरासन, उष्ट्रासन, शशकासन, भुजंगासन, अर्द्धहलासन, शवासन, कपालभांति, अनुलोम विलोम, भ्रामरी प्राणायाम आदि प्रकार के योग एवं व्यायाम किया। योग के पश्चात् प्रबन्ध समिति के सदस्य श्रीमान अमरेन्द्र सिंह जी एवं श्री किशोर शरण द्विवेदी जी ने योग पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए योग के लाभ से सभी को अवगत कराया तथा विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती निधि द्विवेदी जी ने अपने सम्बोधन में योग की महत्ता पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि योग जीवन जीने की कला है। कल्याण मंत्र से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

हमारी मंहगाई से बातें

एक दिन ईमानदारीजी को ढूंढते ढूंढते ईमानदारजी की कुटिया पर पहुँचे। कुटिया की जगह कोठी नजर आई, जानकर हमने कॉल बजाई। भीतर से एक सुन्दर युवती निकलकर बाहर आई। मैंने पूछा ईमानदारजी घर पर है बोली –"ईमानदारजी, उन्हें गुजरे तो वर्षों बीत गये, यहाँ बेईमानजी रहते हैं। मैं उनकी पत्नी हूँ, मुझे मँहगाई कहते हैं। "मैने पूछा–"उनकी एक बेटी थी" बोली–"हाँ, गरीबी, पिछड़े वाले झोपड़ें में रहती है, उसने एक हिन्दी टीचर से शादी कर ली है, अपनी रेशम सी जवानी खादी कर ली। 50 वर्षो में कपूतों के ढेर लगा दिए। मेरा एक बेटा है, सामने वाले बंगले में रहता है। नाम उसका भ्रष्टाचार है, लकिन जमाना डर से उन्हें शिष्टाचार कहता है। उसकी हर रात होती है गुलाबी, रंगीन होती है हर भोर। उसके हाथ में रहता है चाँदी का जूता, जिसके सिर पर पड़ता है वही कहता है।" once more, once more, once more.

एक बेहतरीन किताब 100 अच्छे दोस्त के बराबर है,
लेकिन एक सर्वश्रेष्ठ दोस्त पुस्तकालय के बराबर है।

❖ ❖ ❖ ❖

ज्ञान से ही आप दुनिया की खूबसूरती को देख सकते हैं

प्रधानाचार्य योजना में सम्मान प्राप्त करते हुए
मा.यतींद्र श्री अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री

नवीन प्रधानाचार्य शिक्षण वर्ग के प्रतिभागी

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023
प्रेषण डाकघर-रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि- 5,6,7,8

योग कराते हुए मा. हेमचन्द्र जी, क्षेत्रिय संगठन मंत्री, विद्याभारती, पूर्वी उ.प्र.

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस पर योग करते बन्धु/भगिनी

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स-22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ- 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : 01.06.2023

UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 अंक - 10 युगाब्द - 5125 विक्रम संवत् - 2080 जुलाई - 2023

मूल्यः 12

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े काको लागूं पाएं।
बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय।।

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

स्वावलम्बन

महान समाज सेवक और प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से भला कौन परिचित नहीं है! उनके जीवन की यह एक घटना स्वावलम्बन से संबंध रखती है।

बंगाल के एक छोटे से स्टेशन पर एक रेलगाड़ी आकर रुकी। गाड़ी में से एक आधुनिक नौजवान लड़का उतरा। लड़के के पास एक छोटा–सा संदूक था। स्टेशन पर उतरते ही लड़के ने कुली को आवाज लगानी शुरू कर दी।

वह एक छोटा स्टेशन था, जहाँ पर ज्यादा लोग नहीं उतरते थे, इसलिए वहाँ उस स्टेशन पर कुली नहीं थे। स्टेशन पर कुली न देखकर लड़का परेशान हो गया। इतने में एक अधेड़ उम्र का आदमी धोती–कुर्ता पहने हुए लड़के के पास से गुजरा। लड़के ने उसे ही कुली समझा और उसे सामान उठाने के लिए कहा। धोती–कुर्ता पहने हुए आदमी ने भी चुपचाप सन्दूक उठाया और आधुनिक नौजवान के पीछे चल पड़ा।

घर पहुँचकर नौजवान ने कुली को पैसे देने चाहे, पर कुली ने पैसे लेने से साफ इन्कार कर दिया और नौजवान से कहा–"धन्यवाद! पैसों की मुझे जरूरत नहीं है, फिर भी अगर तुम देना चाहते हो, तो एक वचन दो कि आगे से तुम अपना सारा काम अपने हाथों ही करोगे। अपना काम अपने आप करने पर ही हम स्वावलम्बी बनेंगे और जिस देश का नौजवान स्वावलम्बी नहीं हो, वह देश कभी सुखी और समृद्धिशाली नहीं हो सकता।'

धोती–कुर्ता पहने यह व्यक्ति स्वयं उस समय के महान समाज–सेवक और प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ही थे।

प्रधानाचार्य योजना में सम्मान प्राप्त करते हुए
मा.यतींद्र श्री अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री

नवीन प्रधानाचार्य शिक्षण वर्ग के प्रतिभागी

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023
प्रेषण डाकघर-रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि- 5,6,7,8

योग कराते हुए मा. हेमचन्द्र जी, क्षेत्रिय संगठन मंत्री, विद्याभारती, पूर्वी उ.प्र.

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस पर योग करते बन्धु/भगिनी

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स-22, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ- 226020, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : 01.06.2023